

सम्पन्न आत्मा सदा स्वयं और सेवा से सन्तुष्ट

हल चल से परे ले जाने वाले सदा अचल, अव्यक्त बापदादा अपने अचल अडोल बच्चों के प्रति बोले:-

आज दूर देशवासी बच्चों से मिलने के लिए बच्चों के साकारी लोक में साकार का आधार ले बच्चों को और इस साकारी पुरानी दुनिया को भी देख रहे हैं। पुरानी दुनिया अर्थात् हलचल की दुनिया। बापदादा हलचल के दुनिया की रौनक देख बच्चों की अचल स्थिति को देख रहे थे। यह सब हलचल के नज़ारे साक्षी हो देखते हैं। खेल में यह नज़ारे और ही अपना अचल स्वीट होम और अपनी निर्विघ्न स्वीट राजधानी याद दिलाते हैं। स्मृति आती है कि हमारा घर, हमारा राज्य क्या था और अब भी क्या राज्य आने वाला है और घर जाने वाले हैं। आज बापदादा यह दृश्य देख रूहरिहान कर रहे थे। यह सब हलचल की दुनिया में रह, यह दृश्य देखना कब तक? ब्रह्मा बाप को बच्चों को यह थोड़ा बहुत सहन करने का दृश्य देख दिल में क्या आता कि अभी से सभी को वतन में बुला लेवें। यह बात पसन्द है? उड़ सकेंगे? कोई रस्सियाँ आदि तो नहीं बांधी हुई हैं? किसी भी प्रकार के लगाव से पंख कम-ज़ोर तो नहीं है? लगाव से पंख कहाँ चिपके हुए तो नहीं हैं? अभी ऐसी तैयारी की हुई है? बापदादा तो सेकण्ड में उड़ेंगे और आप तैयारी करते करते रह जाओ तो! तैयार तो हो ना! पहले तो दो बातें अपने से पूछनी पड़ें –

१ – एक तो सम्पूर्ण स्वतन्त्र आत्मा हैं? अपने पुरुषार्थ की रफतार से अपने आप से सन्तुष्ट हैं? अपनी सन्तुष्टता के साथ-साथ स्वयं की श्रेष्ठ स्थिति का सर्व सम्पर्क वाली आत्माओं से सन्तुष्टता का रेसपान्ड मिलता है?

२ – दूसरी बात सेवा में स्वयं से सन्तुष्ट हैं? यथार्थ शक्तिशाली विधि का रिटर्न सिद्धि प्राप्त हो रही है? अपने राज्य की वैरायटी प्रकार की आत्माओं को जैसे राज्य अधिकारी रॉयल फैमली के अधिकारी, रॉयल प्रजा के अधिकारी और साधारण प्रजा के अधिकारी, सर्व प्रकार के आत्माओं को संख्या प्रमा तैयार किया है? करावनहार बाप है लेकिन निमित्त करनहार बच्चों को ही बनाते हैं। क्योंकि कर्म का फल प्रालब्ध मिलती है। निमित्त कर्म बच्चों को ही करना है। सम्बन्ध में ब्रह्मा बाप के साथ-साथ बच्चों को आना है। बाप तो न्यारा और प्यारा ही रहेगा। तो ऐसी चेकिंग करके फिर बताओ कि तैयार हो? कार्य को आधा में तो नहीं छोड़ना है ना! और बिना सम्पन्नता के आत्मा कर्मातीत हो बाप के साथ जा नहीं सकती है। समान वाले ही साथ जायेंगे। जाना तो साथ है या पीछे-पीछे आना है! शिव की बरात में तो नहीं आना है ना! अभी बताओ तैयार हो? या सोच रहे हो कि छू मन्त्र का कुछ खेल हो जाए। शिव मन्त्र ही छू मन्त्र है। वह तो मिला हुआ है ना! ब्रह्मा बाप को बहुत ओना था कि बच्चों को तकलीफ न हुई हो। तकलीफ हुई वा मनोरंजन हुआ? (आज बहुत वर्षा होने के कारण टेन्ट आदि सब गिर गये) टेन्ट हिला वा दिल भी हिली? दिल तो मजबूत है ना। क्या होगा, कैसे जायेंगे, यह हलचल तो नहीं है? कुछ तो नई चीज भी देखो ना! आबू की मानसून आप लोग तो कभी देखते नहीं हो। यह भी थोड़ा सा अनुभव हो रहा है। पहाड़ों की बारिश भी देखनी चाहिए ना। यह भी एक रमणीक दृश्य देखा। जल्दी भागने का संकल्प तो नहीं आता है ना। यह भी अच्छा है जो लास्ट दिन में तूफान आया है। कोई नई न्यूज़ तो जाकर सुनायेंगे ना कि क्या क्या देखा। सुनाने के समाचार में रमणीकता तो आयेगी ना! वैसे तो सब अचल हैं। अभी तो बहुत कुछ होना है। यह तो कुछ नहीं है। यह भी तत्वों के परिवर्तन की निशानियाँ हैं। इसको देख जैसे तत्वों की रफतार तेज जा रही है ऐसे स्व-परिवर्तन की रफतार भी तीव्र हो। अच्छा –

ऐसे सदा सव-परिवर्तन में तीव्रगति से चलने वाले, स्व की सम्पूर्णता से सेवा के कार्य की सम्पन्नता करने वाले, सदा साक्षीपन की स्थिति में स्थित रह हलचल के पार्ट को भी रमणीक पार्ट समझ अचल हो देखने वाले, ऐसे सदा शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

पार्टीयों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

(१) सदा साक्षीपन की स्थिति में स्थित रहते हुए ड्रामा के हर दृश्य को देखते हो? साक्षीपन की स्थिति सदा ड्रामा के अन्दर हीरो पार्ट बजाने में सहयोगी होती है। अगर साक्षीपन नहीं तो हीरो पार्ट बजा नहीं सकते। हीरो पार्टधारी से साधारण पार्टधारी बन जाते हैं। साक्षीपन की स्टेज सदा ही डबल हीरो बनाती है। एक हीरे समान बनाती है और दूसरा हीरो पार्टधारी बनाती है। साक्षीपन अर्थात् देह से न्यारे, आत्मा मालिकपन की स्टेज पर स्थित रहे। देह से भी साक्षी। मालिक। इस देह से कर्म कराने वाली, करने वाली नहीं। ऐसी साक्षी स्थिति सदा रहती है? साक्षी स्थिति सहज पुरुषार्थ का अनुभव कराती है? क्योंकि साक्षी स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात आ नहीं सकती। यह है मूल अभ्यास। यही साक्षी स्थिति का पहला और लास्ट पाठ है। क्योंकि लास्ट में जब चारों आरे की हलचल होगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे। तो यही पाठ पक्का करो। अच्छा –

(२) सदा अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो? संगमयुग श्रेष्ठ युग है, परिवर्तन युग है, आत्मा और परमात्मा के मिलन मेले का युग है। ऐसे संगमयुग के विशेषताओं को सोचो तो कितनी हैं। इन्हीं विशेषताओं के स्मृति में रह समर्थ बनो। जैसी स्मृति वैसा स्वरूप स्वतः बन जाता है। तो सदा ज्ञान का मनन करते रहो। मनन करने से शक्ति भरती है। अगर मनन नहीं करते, सिर्फ

सुनते सुनाते तो शक्ति स्वरूप नहीं। लेकिन सुनाने वाले स्पीकर बनेंगे। आप बच्चों के मनन का चित्र भक्ति में भी दिखाया है। कैसे मनन करो वह चित्र याद है! विष्णु का चित्र नहीं देखा है? आराम से लेटे हुए हैं और मनन कर रहे हैं, सिमरण कर रहे हैं। सिमरण कर मनन कर हर्षित हो रहे हैं। तो यह किसका चित्र है? शैया देखो कैसी है! सांप को शैया बना दिया अर्थात् विकार अधीन हो गये। उसके ऊपर सोचा है। नीचे वाली चीज अधीन होती है, ऊपर मालिक होते हैं। मायाजीत बन गये तो निश्चित। माया से हार खाने की, युद्ध करने की कोई चिन्ता नहीं। तो निश्चित और मनन करके हर्षित हो रहे हैं। ऐसे अपने को देखो मायाजीत बने हैं। कोई भी विकार वार न करे। रोज़ नई नई पाइंट स्मृति में रख मनन करो तो बड़ा मज़ा आयेगा, मौज में रहेंगे। क्योंकि बाप का दिया हुआ खजाना मनन करने से अपना अनुभव होता है। जैसे भोजन पहले अलग होता है, खाने वाला अलग होता है। लेकिन जब हजम कर लेते तो वही भोजन खून बन शक्ति के रूप में अपना बन जाता है। ऐसे ज्ञान भी मनन करने से अपना बन जाता, अपना खजाना है यह महसूसता आयेगी।

(३) सभी अपने को सदा श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? श्रेष्ठ आत्मा अर्थात् हर संकल्प, बोल और कर्म सदा श्रेष्ठ हो। क्योंकि साधारण जीवन से निकल श्रेष्ठ जीवन में आ गये। कलियुग से निकल संगमयुग पर आ गये। जब युग बदल गया, जीवन बदल गई, तो जीवन बदला अर्थात् सब कुछ बदल गया। ऐसा परिवर्तन अपने जीवन में देखते हो? कोई भी कर्म, चलन साधारण लोगों के माफिक न हो। वे हैं लौकिक और आप अलौकिक। तो अलौकिक जीवन वाले लौकिक आत्माओं से न्यारे होंगे। संकल्प को भी चेक करो कि साधारण है वा अलौकिक है? साधारण है तो साधारण को चेक करके चेन्ज कर लो। जैसे कोई चीज सामने आती है तो चेक करते हो यह खाने योग्य है, लेने योग्य है, अगर नहीं होती तो नहीं लेते, छोड़ देते हो ना। ऐसे कर्म करने के पहले कर्म को चेक करो। साधारण कर्म करते-करते साधारण जीवन बन जायेगी फिर तो जैसे दुनिया वाले वैसे आप लोग भी उसमें मिव्स हो जायेंगे। न्यारे नहीं लगेगे। अगर न्यारापन नहीं तो बाप का प्यारा भी नहीं। अगर कभी कभी समझते हो कि हमको बाप का प्यार अनुभव नहीं हो रहा है तो समझो कहाँ न्यारेपन में कमी है, कहाँ लगाव है। न्यारे नहीं बने हो तब बाप का प्यार अनुभव नहीं होता। चाहे अपनी देह से, चाहे सम्बन्ध से, चाहे किसी वस्तु से...स्थूल वस्तु भी योग को तोड़ने के निमित्त बन जाती है। सम्बन्ध में लगाव नहीं होगा लेकिन खाने की वस्तु में, पहनने की वस्तु में लगाव होगा, कोई छोटी चीज भी नुकसान बहुत बड़ा कर देती है। तो सदा न्यारापन अर्थात् अलौकिक जीवन। जैसे वह बोलते, चलते, गृहस्थी में रहते ऐसे आप भी रहो तो अन्तर क्या हुआ! तो अपने आपको देखो कि परिवर्तन कितना किया है चाहे लौकिक सम्बन्ध में बहू हो, सासू हो, लेकिन आत्मा को देखो। बहू नहीं है लेकिन आत्मा है। आत्मा देखने से या तो खुशी होगी या रहम आयेगा। यह आत्मा बेचारी परवश है, अज्ञान में है, अंजान में है। मैं ज्ञानवान आत्मा हूँ तो उस अंजान आत्मा पर रहम कर अपनी शुभ भावना से बदलकर दिखाऊंगी। अपनी वृत्ति, दृष्टि चेन्ज चाहिए। नहीं तो परिवार में प्रभाव नहीं पड़ता। तो वृत्ति और दृष्टि बदलना ही अलौकिक जीवन है। जो काम अज्ञानी करते वह आप नहीं कर सकते हो। संग का रंग आपको लग जाए। अपने को देखो मैं ज्ञानी आत्मा हूँ मेरा प्रभाव अज्ञानी पर पड़ता है, अगर नहीं पड़ता तो शुभ भावना नहीं है। बोलने से प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन सूक्ष्म भावना जो होगी उसका फल मिलेगा। अच्छा –

(४) हर कदम में सर्वशक्तिवान बाप का साथ है, ऐसा अनुभव करते हो? जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ सर्व प्राप्तियाँ स्वतः होंगी। जैसे बीज है तो झाड़ समाया हुआ है। ऐसे सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो सदा मालामाल, सदा तृप्त, सदा सम्पन्न होंगे। कभी किसी बात में कमज़ोर नहीं होंगे। कभी कोई कम्पलेट नहीं करेंगे। सदा कम्पलीट। क्या करें, कैसे करें...यह कम्पलेट नहीं। साथ हैं तो सदा विजयी हैं। किनारा कर देते तो बहुत लम्बी लाइन है। एक क्यों क्यू बना देती है। तो कभी क्यों की क्यू न लगे। भक्तों की प्रजा की क्यू भले लगे लेकिन क्यों की क्यू नहीं लगानी है। ऐसे सदा साथ रहने वाले चलेंगे भी साथ। सदा साथ हैं, साथ रहेंगे और साथ चलेंगे यही पक्का वायदा है ना। बहुत काल की कमी अन्त में धोखा दे देगी। अगर कोई भी कमी की रस्सी रह जायेगी तो उड़ नहीं सकेंगे। तो सब रस्सियों को चेक करो। बस बुलावा आये, समय की सीटी बजे और चल पड़ें। हिम्मते बच्चे मददे बाप। जहाँ बाप की मदद है वहाँ कोई मुश्किल कार्य नहीं। हुआ ही पड़ा है।

(५) सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करते हो? इस स्वरूप की स्मृति में रहने से हर परिस्थिति ऐसे अनुभव होगी जैसे परिस्थिति नहीं लेकिन एक साइडसीन है। परिस्थिति समझने से घबरा जाते लेकिन साइडसीन अर्थात् रास्ते के नज़ारे हैं तो सहज ही पार कर लेते। क्योंकि नज़ारों को देख खुशी होती है, घबराते नहीं। तो विघ्न, विघ्न नहीं हैं लेकिन विघ्न आगे बढ़ने का साधन है। परीक्षा क्लस आगे बढ़ाता है। तो यह विघ्न, परिस्थिति, परीक्षा आगे बढ़ने के लिए आते हैं ऐसे समझते हो ना! कभी कोई बात सोचते यह क्या हुआ, क्यों हुआ? तो सोचने में भी टाइम जाता है। सोचना अर्थात् रूकना। मास्टर सर्वशक्तिवान कभी रूकते नहीं। सदा अपने जीवन में उड़ती कला का अनुभव करते हैं।

(६) वरदाता बाप द्वारा सर्व वरदान प्राप्त हुए? बाप द्वारा सबसे मुख्य वरदान कौन सा मिला? एक तो सदा योगी भव और दूसरा पवित्र भव। तो यह दोनों विशेष वरदान सदा जीवन में अनुभव करते हो? योगी जीवन बना ली या योग लगाने वाले योगी हो? योग

लगाने वाले योगी दो चार घण्टा योग लगायेंगे फिर खत्म। लेकिन योगी जीवन अर्थात् निरन्तर। तो निरन्तर योगी जीवन है। ऐसे ही पवित्र भव का वरदान मिला है। पवित्र भव के वरदान से पूज्य आत्मा बन गये। योगी भव के वरदान से सदा शक्ति स्वरूप बन गये। तो शक्ति स्वरूप और पवित्र पूज्य स्वरूप दोनों ही बन गये हो ना। सदा पवित्र रहते हो? कभी-कभी तो नहीं। क्योंकि एक दिन भी कोई अपवित्र बना तो अपवित्र की लिस्ट में आ जायेगा तो पवित्रता की लिस्ट में हो? कभी क्रोध तो नहीं आता? क्रोध या मोह का आना इसको पवित्रता कहेंगे? मोह अपवित्रता नहीं है क्या? अगर नष्टमोहा नहीं बनेंगे तो स्मृति स्वरूप भी नहीं बन सकेंगे। कोई भी विकार आने नहीं देना। जब किसी भी विकार को आने नहीं देंगे तब कहेंगे पवित्र और योगी भव!

बापदादा सभी बच्चों से उम्मीदें रखते हैं, हर बच्चे को दृढ़ संकल्प करना है, व्यर्थ नहीं सोचेंगे, व्यर्थ नहीं करेंगे, व्यर्थ की बीमारी को सदा के लिए खत्म करेंगे। यही एक दृढ़ संकल्प सदा के लिए सफलता मूत्र बना देगा। सदा सावधान रहना है अर्थात् व्यर्थ को खत्म करना है। अच्छा – ओमशान्ति।

17-4-83

कर्मातीत स्थिति के लिए समेटने और समाने की शक्तियों की आवश्यकता

सर्व प्राप्तियों और शक्तियों से सम्पन्न बनाने वाले सर्वशक्तिवान शिवबाबा बोले:-

आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति को अनुभव करते हो? वह श्रेष्ठ स्थिति सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति है। एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो उसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति अनुभव करेंगे। इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है। इसी स्थिति द्वारा हर कार्य में सफलता का अनुभव कर सकते हो। ऐसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव किया है? ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है कर्मातीत स्थिति को पाना। तो लक्ष्य को प्राप्त करने के पहले अभी से इसी अभ्यास में रहेंगे तब ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। इसी लक्ष्य को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति समाने की शक्ति आवश्यक है। क्योंकि विकारी जीवन वा भक्ति की जीवन दोनों में जन्म-जन्मान्तर से बुद्धि का विस्तार में भटकने का के लिए इन दोनों शक्तियों की आवश्यकता है। शुरु से देखो – अपने देह के भान के कितने वैरायटी प्रकार के विस्तार हैं। उसको तो जानते हो ना! मैं बच्चा हूँ, मैं जवान हूँ, मैं बुजुर्ग हूँ। मैं फलाने-फलाने आक्यूपेशन वाला हूँ। इसी प्रकार के देह की स्मृति के विस्तार कितने हैं! फिर सम्बन्ध में आओ कितना विस्तार है। किसका बच्चा है तो किसका बाप है, कितने विस्तार के सम्बन्ध हैं। उसको वर्णन करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि जानते हो। इसी प्रकार देह के पदार्थों का भी कितना विस्तार है! भक्ति में अनेक देवताओं को सन्तुष्ट करने का कितना विस्तार है। लक्ष्य एक को पाने का है लेकिन भटकने के साधन अनेक हैं। इतने सभी प्रकार के विस्तार को सार रूप में लाने के लिए समाने की वा समेटने की शक्ति चाहिए। सर्व विस्तार को एक शब्द से समा देते। वह क्या? बिन्दू। मैं भी बिन्दू बाप भी बिन्दू। एक बाप बिन्दू में सारा संसार समाया हुआ है। यह तो अच्छी तरह से अनुभवी हो ना। संसार में एक है सम्बन्ध, दूसरी है सम्पत्ति। दोनों विशेषतायें बिन्दू बाप में समाई हुई हैं। सर्व सम्बन्ध एक द्वारा अनुभव किया है? सर्व सम्पत्ति की प्राप्ति सुख-शान्ति, खुशी यह भी अनुभव किया है या अभी करना है? तो क्या हुआ? विस्तार सार में समा गया ना! अपने आप से पूछो अनेक तरफ विस्तार में भटकने वाली बुद्धि समेटने के शक्ति के आधार पर एक में एकाग्र हो गई है? वा अभी भी कहाँ विस्तार में भटकती है! समेटने की शक्ति और समाने की शक्ति का प्रयोग किया है? या सिर्फ नालेज है! अगर इन दोनों शक्तियों को प्रयोग करना आता है तो उसकी निशानी सेकण्ड में जहाँ चाहो जब चाहे बुद्धि उसी स्थिति में स्थित हो जायेगी। जैसे स्थूल सवारी में पॉवरफुल ब्रेक होती है तो उसी सेकण्ड में जहाँ चाहें वहाँ रोक सकते हैं। जहाँ चाहें वहाँ गाड़ी को या सवारी को उसी दिशा में ले जा सकते हैं। ऐसे स्वयं यह शक्ति अनुभव करते हो वा एकाग्र होने में समय लगता है? वा व्यर्थ से समर्थ की ओर मेहनत लगती है तो समझो इन दोनों शक्तियों की कमी है। संगम-युग के ब्राह्मण जीवन की विशेषता है ही सार रूप में स्थित हो सदा सुख-शान्ति के, खुशी के, ज्ञान के, आनन्द के झूले में झूलना। सर्व प्राप्तियों के सम्पन्न स्वरूप के अविनाशी नशे में स्थित रहो। सदा चेहरे पर प्राप्ति ही प्राप्ति है उस सम्पन्न स्थिति की झलक और फलक दिखाई दे। जब सिर्फ स्थूल धन से सम्पन्न विनाशी राजाई प्राप्त करने वाले राजाओं के चेहरे पर भी द्वापर के आदि में वह चमक थी। यहाँ तो अविनाशी प्राप्ति है। तो कितनी रूहानी झलक और फलक चेहरे दिखाई देगी! ऐसे अनुभव करते हो? वा सिर्फ अनुभव सुन करके खुश होते हो! पाण्डव सैना विशेष है ना! पाण्डव सेना को देख हर्षित जरूर होते हैं। लेकिन पाण्डवों की विशेषता है सदा बहादुर दिखाते हैं, कमज़ोर नहीं। अपने यादगार चित्र देखे हैं ना। चित्रों में भी महावीर दिखाते हैं ना। तो बापदादा भी सभी पाण्डवों को विशेष रूप से, सदा विजयी, सदा बाप के साथी अर्थात् पाण्डवपति के साथी, बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में सदा रहें, यही विशेष स्मृति का वरदान दे रहे हैं। भले नये भी आये हो लेकिन हो तो कल्प पहले के अधिकारी आत्मायें। इसलिए सदा अपने सम्पूर्ण अधिकार को पाना ही है – इस नशे और निश्चय में सदा रहना। समझा। अच्छा!

सदा सेकण्ड में बुद्धि को एकाग्र कर सर्व प्राप्ति को अनुभव कर, सदा सर्व शक्तियों को समय प्रमाण प्रयोग में लाते सदा, एक बाप में सारा संसार अनुभव करने वाले, ऐसे सम्पन्न और समान श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ

(१) अधरकुमारों के साथ:- ऐसा श्रेष्ठ भाग्य कभी अपने लिए सोचा था ? कभी उम्मीद भी नहीं थी कि इतना श्रेष्ठ भाग्य हमें प्राप्त हो सकता है लेकिन नाउम्मीद आत्माओं को बाप ने उम्मीदवार बना दिया। नाउम्मीदी का समय अब समाप्त हो गया। अभी हर कदम में उम्मीद रहती है कि हमारी सफलता है ही। यह संकल्प तो नहीं आता कि पता नहीं होगी या नहीं होगी ? किसी भी कार्य में चाहे स्वयं के पुरुषार्थ में, चाहे सेवा में, दोनों में नाउम्मीदी का संस्कार समाप्त हो जाए। कोई भी संस्कार चाहे काम का, चाहे लोभ का, चाहे अहंकार का, बदलने में नाउम्मीदी न आए। ऐसे नहीं मैं तो बदल ही नहीं सकता, यह तो बदलना बड़ा मुश्किल है। ऐसा संकल्प भी न आये। क्योंकि अगर अभी नहीं खत्म करेंगे तो कब करेंगे ? अभी दशहरा है ना। सतयुग में तो दीपमाला हो जायेगी। रावण को खत्म करने का दशहरा अभी है। इसमें सदा विजय का उमंग उत्साह रहे। नाउम्मीदी के संस्कार नहीं। कोई भी मुश्किल कार्य इतना सहज अनुभव हो जैसे कोई बड़ी ही नहीं है क्योंकि अनेक बार कार्य कर चुके हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं। कई बार की हुई को रिपीट कर रहे हैं। तो सदा उम्मीदवार। नाउम्मीद का नामनिशान भी न रहे। कभी कोई स्वभाव संस्कार में संकल्प न आये कि पता नहीं यह परिवर्तन होगा या नहीं होगा। सदा के विजयी, कभी-कभी के नहीं। अगर कोई स्वप्न में भी कमी हो तो उसको सदा के लिए समाप्त कर देना। नाउम्मीद को सदा के लिए उम्मीद में बदल देना। निश्चय अटूट है तो विजय भी सदा है। निश्चय में जब क्यों, क्या आता तो विजय अर्थात् प्राप्ति में भी कुछ न कुछ कमी पड़ जाती है तो सदा उम्मीदवार, सदा विजयी। नाउम्मीदों को सदाकाल के लिए उम्मीदों में बदलने वाले।

(२) सदा अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें, पुरुषोत्तम आत्मायें वा ब्राह्मण चोटी महान आत्मायें समझते हो ? अभी से पुरुषोत्तम बन गये ना। दुनिया में और भी पुरुष हैं लेकिन उन्हीं से न्यारे और बाप के प्यारे बन गये इसलिए पुरुषोत्तम बन गये। औरों के बीच में अपने को अलौकिक समझते हो ना ! चाहे सम्पर्क में लौकिक आत्माओं के आते लेकिन उनके बीच में रहते हुए भी मैं अलौकिक न्यारी हूँ यह तो कभी नहीं भूलना है ना ! क्योंकि आप बन गये हो हंस, ज्ञान के मोती चुगने वाले होली हंस हो। वह हैं गन्द खाने वाले बगुले। वे गन्द ही खाते, गन्द ही बोलते...तो बगुलों के बीच में रहते हुए अपना होलीहंस जीवन कभी भूल तो नहीं जाते ! कभी उसका प्रभाव तो नहीं पड़ जाता ? वैसे तो उसका प्रभाव उन पर पड़ना चाहिए, उनका आप पर नहीं। तो सदा अपने को होलीहंस समझते हो ? होलीहंस कभी भी बुद्धि द्वारा सिवाए ज्ञान के मोती के और कुछ स्वीकार नहीं कर सकते। ब्राह्मण आत्मायें जो ऊंच हैं, चोटी हैं वह कभी भी नीचे की बातें स्वीकार नहीं कर सकते। बगुले से होलीहंस बन गये। तो होलीहंस सदा स्वच्छ, सदा पवित्र। पवित्रता ही स्वच्छता है। हंस सदा स्वच्छ है सदा सफेद-सफेद। सफेद भी स्वच्छता वा पवित्रता की निशानी है। आपकी ड्रेस भी सफेद है। यह प्यूरिटी की निशानी है। किसी भी प्रकार की अपवित्रता है तो होलीहंस नहीं। होलीहंस संकल्प भी अशुद्ध नहीं कर सकते। संकल्प भी बुद्धि का भोजन है। अगर अशुद्ध वा व्यर्थ भोजन खाया तो सदा तन्दरूस्त नहीं रह सकते। व्यर्थ चीज को फेंका जाता, इक्का नहीं किया जाता इसलिए व्यर्थ संकल्प को भी समाप्त करो, इसी को ही होलीहंस कहा जाता है। अच्छा – पाण्डवों से – पाण्डव अर्थात् संकल्प और स्वप्न में भी हार न खाने वाले। विशेष यह सलोगन याद रखना कि पाण्डव अर्थात् सदा विजयी। स्वप्न भी विजय का आये। इतना परिवर्तन करना। सभी जो बैठे हो विजयी पाण्डव हो। वहाँ जाकर हार खा ली, यह पत्र तो नहीं लिखेंगे। माया आ नहीं जाती लेकिन आप उसे खुद बुलाते हो। कमजोर बनना अर्थात् माया को बुलाना। तो किसी भी प्रकार की कमजोरी माया को बुलाती है। तो पाण्डवों ने क्या प्रतिज्ञा की ? सदा विजयी रहेंगे। हार खाकरके छिपना नहीं, लेकिन सदा विजयी रहना। ऐसे प्रतिज्ञा करने वालों को सदा बापदादा की बधाई मिलती रहती है। सदा वाह-वाह के गीत बाप ऐसे बच्चों के लिए गाते रहते हैं। तो वाह-वाह के गीत सुनेंगे ना सभी। हार होगी तो हाय-हाय करेंगे, विजयी होंगे तो वाह-वाह करेंगे। सब विजयी, सारे गुप में एक भी हार खाने वाला नहीं। अच्छा – ओम् शान्ति।

19-4-83

संगमयुग का प्रभुफल खाने से सर्व प्राप्ति

कर्मयोग की शिक्षा देने वाले, सर्व स्नेही बापदादा बोले:-

आज बापदादा अपने सर्व स्नेही बच्चों को स्नेह का रिटर्न देने, मिलन मनाने, स्नेह का प्रत्यक्षफल, स्नेह की भावना का श्रेष्ठ फल देने के लिए बच्चों के संगठन में आये हैं। भक्ति में भी स्नेह और भावना भक्त-आत्मा के रूप में रही। तो भक्त रूप में भक्ति थी लेकिन शक्ति नहीं थी। स्नेह था लेकिन पहचान वा सम्बन्ध श्रेष्ठ नहीं था। भावना थी लेकिन अल्पकाल की कामना भरी भावना थी। अभी भी स्नेह और भावना है लेकिन समीप सम्बन्ध के आधार पर स्नेह है। अधिकारीपन के शक्ति की, अनुभव के अर्थों की

श्रेष्ठ भावना है। भिखारीपन की भावना बदल, सम्बन्ध बदल अधिकारीपन का निश्चय और नशा चढ़ गया। ऐसे सदा श्रेष्ठ आत्माओं को प्रत्यक्षफल प्राप्त हुआ है। सभी प्रत्यक्षफल के अनुभवी आत्मायें हो? प्रत्यक्षफल खाकर देखा है? और फल तो सतयुग में भी मिलेंगे और अब कलियुग के भी बहुत फल खाये। लेकिन संगमयुग का प्रभुफल, प्रत्यक्ष फल अगर अब नहीं खाया तो सारे कल्प में नहीं खा सकते। बापदादा सभी बच्चों से पूछते हैं-प्रभु फल, अविनाशी फल, सर्व शक्तियां, सर्वगुण, सर्व सम्बन्ध के स्नेह के रस वाला फल खाया है? सभी ने खाया है या कोई रह गया है? यह ईश्वरीय जादू का फल है। जिस फल खाने से लोहे से पारस से भी ज्यादा हीरा बन जाते हो। इस फल से जो संकल्प करो वह प्राप्त कर सकते हो। अविनाशी फल, अविनाशी प्राप्ति। ऐसे प्रत्यक्ष फल खाने वाले सदा ही माया के रोग से तन्दरूस्त रहते हैं। दिख, अशान्ति से सर्व विघ्नों से सदा दूर रहने का अमर फल मिल गया ह! बाप का बनना और ऐसे श्रेष्ठ फल प्राप्त होना।

आज बापदादा आये हुए विशेष पाण्डव सेना को देख हर्षित तो हो ही रहे हैं। साथ-साथ ब्रह्मा बाप के हमजिन्स से सदा पार्टी की जाती, पिकनिक मनाई जाती। तो आज इस प्रभु फल की पिकनिक मना रहे हैं। लक्ष्मी-नारायण भी ऐसी पिकनिक नहीं करेंगे। ब्रह्मा बाप और ब्राह्मणों की यह अलौकिक पिकनिक है। ब्रह्मा बाप हमजिन्स को देख हर्षित होते हैं। लेकिन हमजिन्स ही बनना। हर कदम में फालो फादर करने वाले समान साथी अर्थात् हमजिन्स। ऐसे हमजिन्स हो ना वा अभी सोच रहे हो क्या करें कैसे करें। सोचने वाले हो वा समान बनाने वाले हो? सेकण्ड में सौदा करने वाले हो वा अभी भी सोचने का समय चाहिए? सौदा करके आये हो वा सौदा करने आये हो? परमिशन किसको मिली है, सभी ने फार्म भरे थे? वा छोटी-छोटी ब्राह्मणियों को बातें बताके पहुँच गये हो? ऐसे बहुत मीठी-मीठी बातें बताते हैं। बापदादाके पास सभी के मन के सफाई की और चतुराई की दोनों बाते पहुँचती हैं। नियम प्रमाण सौदा करके आना है। लेकिन मधुबन में कई सौदा करने वाले भी आ जाते हैं। करके आने वाले के बजाए यहाँ आकर सौदा करते हैं इसलिए बापदादा क्वान्टिटी में क्वालिटी को देख रहे हैं। क्वान्टिटी की विशेषता अपनी है, क्वालिटी की विशेषता अपनी है। क्वालिटी की विशेषता अपनी है। चाहिए दोनों ही। गुलदस्ते में वैरायटी रंग रूप वाले फूलों से सजावट होती है। पत्ते भी नहीं होंगे तो गुलदस्ता नहीं शोभेगा। तो बापदादा के घर के श्रृंगार तो सभी हुए, सभी के मुख से बाबा शब्द तो निकलता ही है। बच्चे घरका श्रृंगार होते हैं। अभी भी देखो यह ओमशान्ति भवन का हाल आप सबके आने से सज गया है ना। तो घर के श्रृंगार, बाप के श्रृंगार सदा चमकते रहो। क्वान्टिटी से क्वालिटी में परिवर्तन हो जाओ। समझा – आज तो सिर्फ मिलने का दिन था फिर भी ब्रह्मा बाप को हमजिन्स पसन्द आ गये। इसलिए पिकनिक की। अच्छा –

सदा प्रभु फल खाने के अधिकारी, सदा ब्रह्मा बाप समान सेकण्ड में सौदा करने वाले, हर कर्म में कर्मयोगी, ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले, ऐसे बाप समान विशेष आत्माओं को, चारों ओर के क्वालिटी और क्वान्टिटी वाले बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकत (अधुरकुमारों से)

(१) सदा अपने को विश्व के अन्दर कोटो में से कोई हम हैं – ऐसे अनुभव करते हो? जब भी यह बात सुनते हो – कोटों से कोई, कोई में भी कोई तो वह स्वयं को समझते हो? जब हूबहू पार्ट रिपीट होता है तो उस रिपीट हुए पार्ट में हर कल्प आप लोग ही विशेष होंगे ना! ऐसे अटल विश्वास रहे। सदा निश्चयबुद्धि सभी बातों में निश्चिन्त रहते हैं। निश्चय की निशानी है निश्चिन्त। चिन्तायें सारी मिट गई। बाप ने चिन्ताओं की चिन्ता से बचा लिया ना! चिन्ताओं की चिन्ता से उठाकर दिलतख्त पर बिठा दिया। बाप से लगन लगी और लगन के आधार पर लगन की अग्नि में चिन्तायें सब ऐसे समाप्त हो गई जैसे थी ही नहीं। एक सेकेण्ड में समाप्त हो गई ना! ऐसे अपने को शुभचिन्तक आत्मायें अनुभव करते हो! कभी चिन्ता तो नहीं रहती! न तन की चिन्ता, न मन में कोई व्यर्थ चिन्ता और न धन की चिन्ता। क्योंकि दाल रोटी तो खाना है और बाप के गुण गाना है। दाल रोटी तो मिलनी ही है। तो न धन की चिन्ता, न मन की परेशानी और न तन के कर्मभोग की भी चिन्ता। क्योंकि जानते हैं यह अन्तिम जन्म और अन्त का समय है इसमें सब चुक्ता होना है इसलिए सदा शुभचिन्तक। क्या होगा! कोई चिन्ता नहीं। ज्ञान की शक्ति से सब जान गये। जब सब कुछ जान गये तो क्या होगा, यह क्वेश्चन खत्म। क्योंकि ज्ञान है जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। तो सदा शुभचिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त आत्मायें, यही तो जीवन है। अगर जीवन में निश्चिन्त नहीं तो वह जीवन ही क्या है! ऐसी श्रेष्ठ जीवन अनुभव कर रहे हो? परिवार की भी चिन्ता तो नहीं है? हरेक आत्मा अपना हिसाब किताब चुक्ता भी कर रही है और बना भी रही है इसमें हम क्या चिन्ता करें। कोई चिन्ता नहीं। पहले चिन्ता पर जल रहे थे अभी बाप ने अमृत डाल जलती चिन्ता से मरजीवा बना दिया। जिंदा कर दिया। जैसे कहते हैं मरे हुए को जिंदा कर दिया। तो बाप ने अमृत पिलाया और अमर बना दिया। मरे हुए मुर्दे के समान थे और अब देखो क्या बन गये। मुर्दे से महान बन गये। पहले कोई जान नहीं थी तो मुर्दे समान ही कहेंगे ना। भाषा भी क्या बोलते थे, अज्ञानी लोग भाषा में बोलते हैं – मर जाओ ना। या कहेंगे हम मर जाए तो बहुत अच्छा। अब तो मरजीवा हो गये, विशेष आत्मायें बन गये। यही खुशी है ना। जलती हुई चिन्ता से अमर हो गये यह कोई कम बात है! पहले सुनते थे भगवान मुर्दे को भी जिंदा करता है, लेकिन

कैसे करता यह नहीं समझते थे। अभी समझते हो हम ही जिंदा हो गये तो सदा नशे और खुशी में रहे।

टीचर्स के साथ :- सेवाधारियों की विशेषता क्या है? सेवाधारी अर्थात् आंख खुले और सदा बाप के साथ बाप के समान स्थिति का अनुभव करे। अमृतवेले के महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी। विशेष सेवाधारी की महिमा है जो विशेष वरदान के समय को जानें और विशेष वरदानों का अनुभव करें। अगर अनुभव नहीं तो साधारण सेवाधारी हुए, विशेष नहीं। विशेष सेवाधारी बनना है तो यह विशेष अधिकार लेकर विशेष बन सकते हो। जिसको अमृतवेले का, संकल्प का, समय का और सेवा का महत्व है ऐसे सर्व महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी होते हैं। तो इस महत्व को जान महान बनना है। इसी महत्व को जान स्वयं भी महान बनो और औरों को भी महत्व बतलाकर, अनुभव कराकर महान बनाओ। अच्छा – ओम् शान्ति।

21-4-83

संगमयुगी मर्यादाओं पर चलना ही पुरुषोत्तम बनना है

सदा आत्मिक स्थिति में स्थित करने वाले, समर्थ स्थिति के हंस आसन पर स्थित करने वाले, त्रिकालदर्शी अव्यक्त बाप दादा बोले:- आज बापदादा सर्व मर्यादा पुरुषोत्तम बच्चों को देख रहे हैं। संगमयुग की मर्यादायें ही पुरुषोत्तम बनाती हैं। इसलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। इन तमोगुणी मनुष्य आत्माओं और तमोगुणी प्रकृति के वायुमण्डल, वायुब्रेशन से बचने का सहज साधन यह मर्यादायें हैं। मर्यादाओं के अन्दर रहने वाले सदा मेहनत से बचे हुए हैं। मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं। मर्यादाओं हर कदम के लिए बापदादा द्वारा मिली हुई हैं – उसी प्रमाण पर कदम उठाने से स्वतः ही मर्यादापूर्वक जीवन को अच्छी तरह से जानते हो! उसी प्रमाण चलना यही पुरुषोत्तम बनना है। जब नाम ही है पुरुषोत्तम है अर्थात् सर्व साधारण पुरुषों से उत्तम। तो चेक करो कि हम श्रेष्ठ आत्माओं की पहली मुख्य बात स्मृति उत्तम है? स्मृति उत्तम है तो वृत्ति और दृष्टि, स्थिति स्वतः ही श्रेष्ठ है। स्मृति के मर्यादा की लकीर जानते हो? मैं भी श्रेष्ठ आत्मा और सर्व भी एक श्रेष्ठ बाप की आत्मायें हैं! वैरायटी आत्मायें वैरायटी पार्ट बजाने वाली हैं। यह पहला पाठ नैचुरल रूप में स्मृति स्वरूप में रहे। देह को देखते भी आत्मा को देखें। यह समर्थ स्मृति हर सेकण्ड स्वरूप में आये, स्मृति स्वरूप हो जाएं। सिर्फ सिमरण में न हो कि मैं भी आत्मा यह भी आत्मा। लेकिन मैं भी हूँ ही आत्मा, यह भी है ही आत्मा। इस पहली स्मृति की मर्यादा स्वयं को सदा निर्विघ्न बनाती और औरों को भी इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थ पन के वायुब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे और भी निर्विघ्न बन जाते हैं।

पाण्डव सेना मिलन मनाने तो आई लेकिन मिलन के साथ-साथ पहली मर्यादा के लकीर का फाउन्डेशन 'स्मृति भव' का वरदान भी सदा साथ ले जाना। 'स्मृति भव' ही समर्थ भव है। जो भी कुछ सुना उसका इसेन्स क्या ले जायेंगे? इसेन्स है स्मृति भव। इसी वरदान को सदा अमृतवेले रिवाइज करना। हर कार्य करने के पहले इस वरदान के समर्थ स्थिति के आसन पर बैठ नियम कर व्यर्थ है वा समर्थ है, फिर कर्म में आना। कर्म करने के बाद फिर से चेक करो कि कर्म का आदिकाल और अन्तकाल तक समर्थ रहा? नहीं तो कई बच्चे कर्म के आदिकाल समय समर्थ स्वरूप से शुरू करते लेकिन मध्य में समर्थ के बीच व्यर्थ वा साधारण कर्म कैसे हो गया, समर्थ के बजाए व्यर्थ की लाइन में कैसे और किस समय गये, यह मालूम नहीं पड़ता। फिर अन्त में सोचते हैं कि जैसे करना था वैसे नहीं किया। लेकिन रिज़ल्ट क्या हुई! करके फिर सोचना यह त्रिकालदर्शी आत्माओं के लक्षण नहीं हैं। इसलिए तीनों कालों में स्मृति भव वा समर्थ भव। समझा क्या ले जाना है। समर्थ स्थिति के आसन को कभी छोड़ना नहीं। यह आसन ही हंस आसन है। हंस की विशेषता, निर्णय शक्ति की विशेषता है। निर्णय शक्ति द्वारा सदा ही मर्यादा पुरुषोत्तम स्थिति में आगे बढ़ते जायेंगे। यह वरदान "आसन" और यह ईश्वरीय टाइटिल "मर्यादा पुरुषोत्तम" का सदा साथ रहे। अच्छा – आज तो सिर्फ बधाई देने का दिन है। सेवा पर जा रहे हैं तो बधाई का दिन है ना! लौकिक घर नहीं लेकिन सेवा स्थान पर जा रहे हैं। बगुलों के बीच भी जा रहे हो लेकिन सेवा अर्थ जा रहे हो। कर्म सम्बन्ध नहीं समझ के जाना लेकिन सेवा का सम्बन्ध है। कर्म सम्बन्ध चुक्तु करने नहीं बैठे हो लेकिन सेवा का सम्बन्ध निभाने के लिए बैठे हो। कर्मबन्धन नहीं, सेवा का बन्धन है। अच्छा –

सदा व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ स्थिति के हंस आसन पर स्थिति रहने वाले, हर कर्म को त्रिकालदर्शी शक्ति से, तीनों काल समर्थ बनाने वाले, सदा स्वतः आत्मिक स्थिति में स्थित रहने वाले ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

(१) सदा अपने को श्रेष्ठ भाग्यवान अनुभव करते हो? जिसका बाप ही भाग्यविधाता हो वह कितना न भाग्यवान होगा! भाग्यविधाता बाप है तो वह वरसे में क्या देगा? जरूर श्रेष्ठ भाग्य ही देगा ना! सदा भाग्यविधाता बाप और भाग्य दोनों ही याद रहें। जब अपना श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहेगा तब औरों को भी भाग्यवान बनाने का उमंग उत्साह रहेगा। क्योंकि दाता के बच्चे हो। भाग्य

विधाता बाप ने ब्रह्माद्वारा भाग्य बांटा, तो आप ब्राह्मण भी क्या करेंगे? जो ब्रह्मा का काम, वह ब्राह्मणों का काम। तो ऐसे भाग्य बांटने वाले। वे लोग कपड़ा बांटेंगे, अनाज बांटेंगे, पानी बांटेंगे लेकिन श्रेष्ठ भाग्य तो भाग्य विधाता के बच्चे ही बाँट सकते। तो भाग्य बांटने वाली श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हो। जिसे भाग्य प्राप्त है उसे सब कुछ प्राप्त है। वैसे अगर आज किसी को कपड़ा देंगे तो कल अनाज की कमी पड़ जायेगी, कल अनाज देंगे तो पानी की कमी पड़ जायेगी। एक-एक चीज कहाँ तक बांटेंगे। उससे तृप्त नहीं हो सकते। लेकिन अगर भाग्य बांटा तो जहाँ भाग्य है वहाँ सब कुछ है। वैसे भी कोई को कुछ प्राप्त हो जाता है तो कहते हैं वाह मेरा भाग्य। जहाँ भाग्य है वहाँ सब प्राप्त है। तो आप सब श्रेष्ठ भाग्य का दान करने वाले हो। ऐसे श्रेष्ठ महादानी, श्रेष्ठ भाग्यवान। यही स्मृति सदा उड़ती काल में ले जायेगी। जहाँ श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति होगी वहाँ सर्व प्राप्ति की स्मृति होगी। इस भाग्य बांटने में फराखदिल बनो। यह अखुट है। जब थोड़ी चीज होती है तो उसमें कन्जूसी की भावना आ सकती लेकिन यह अखुट है इसलिए बांटते जाओ। सदा देते रहो, एक दिन भी दान देने के सिवाए न हो। सदा के दानी सारा समय अपना खजाना खुला रखते हैं। एक घण्टा भी दान बन्द नहीं करते। ब्राह्मणों का काम ही है सदा विद्या लेना और विद्या का दान करना। तो इसी कार्य में सदा तत्पर रहो।

(२) सदा अपने को संगमयुगी हीरे तुल्य आत्मायें अनुभव करते हो? आप सभी सच्चे हीरे हो ना! हीरे की बहुत वैल्यु होती है। आपके ब्राह्मण जीवन की कितनी वैल्यु है। इसीलिये ब्राह्मणों को सदा चोटी पर दिखाते हैं। चोटी अर्थात् ऊंचा स्थान। वैसे ऊंचे हैं देवता लेकिन देवताओं से भी ऊंचे तुम ब्राह्मण हो – ऐसा नशा रहता है? मैं बाप का, बाप मेरा यही ज्ञान है ना! यही एक बात याद रखनी है। सदा मन में यही गीत चलता रहे जो पाना था वह पा लिया। मुख का गीत तो एक घण्टा भी गायेगे तो थक जायेगे; लेकिन यह गीत गाने में थकावट नहीं होती। बाप का बनने से सब कुछ बन जाते हो, डांस करने वाले भी, गीत गाने वाले भी, चित्रकार भी, प्रैक्टिकल अपना फरिश्ते का चित्र बना रहे हो। बुद्धियोग द्वारा कितना अच्छा चित्र बना लेते हो। तो जो कहो वह सब कुछ हो। बड़े ते बड़े बिजनेसमैन भी हो, मिलों के मालिक भी हो, तो सदा अपने इस आक्यूपेशन को स्मृति में रखो। कभी खान के मालिक बन जाओ तो कभी आर्टिस्ट बन जाओ, कभी डांस करने बन जाओ... बहुत रमणीक ज्ञान है, सूखा नहीं है। कई कहते हैं क्या रोज वही आत्मा, परमात्मा का ज्ञान सुनते रहें, लेकिन यह आत्मा परमात्मा का सूखा ज्ञान नहीं है। बहुत रमणीक ज्ञान है, सिर्फ रोज अपना नया-नया टाइटिल याद रखो – मैं आत्मा तो हूँ लेकिन कौन सी आत्मा हूँ? कभी आर्टिस्ट की आत्मा हूँ, कभी बिजनेसमैन की आत्मा हूँ... तो ऐसे रमणीकता से आगे बढ़ते रहो। बाप भी रमणीक है ना। देखो कभी धोबी बन जाता तो कभी विश्व का रचयिता, कभी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट... तो जैसा बाप वैसे बच्चे... ऐसे ही इस रमणीक ज्ञान का सिमरण कर हर्षित रहो।

वर्तमान समय के प्रमाण स्वयं और सेवा दोनों की रफ्तार का बैलेन्स चाहिए। हरेक को सोचना चाहिए जितनी सेवा ली है उतना रिटर्न दे रहे हैं। अभी समय है सेवा करने का। जितना आगे बढ़ेंगे, सेवा के योग्य समय होता जायेगा लेकिन उस समय परिस्थितियाँ भी अनेक होंगी। उन परिस्थितियों में सेवा करने के लिए अभी से ही सेवा का अभ्यास चाहिए। उस समय आना जाना भी मुश्किल होगा। मंसा द्वारा ही आगे बढ़ाने की सेवा करनी पड़ेगी। वह देने का समय होगा, स्वयं में भरने का नहीं। इसलिए पहले से ही अपना स्टॉक चेक करो कि सर्वशक्तियों का स्टॉक भर लिया है। सर्वशक्तियाँ, सर्वगुण सर्वज्ञान के खजाने, याद की शक्ति से सदा भर-पूर। किसी भी चीज की कमी नहीं चाहिए। अच्छा – ओमशान्ति।

(२८ ता. अमृतवेले बापदादा सतगुरूवार की ने मुबारक दी) :- वृक्षपति दिवस की मुबारक। वृक्षपति दिवस पर सदाकाल के लिए बृहस्पति की दशा कायम रहे यही सदा स्मृति स्वरूप रहना। अब तो सभी ने वायदा पक्का किया है ना! कुमार ग्रुप तैयार हो गया तो आवाज बुलन्द फैल जायेगा। गवर्मेन्ट तक पहुँच जायेगा। लेकिन अविनाशी रहेंगे तो गड़बड़ नहीं करना। उमंग उत्साह, हिम्मत अच्छी है, जहाँ हिम्मत है वहाँ मदद तो है ही। शक्तियाँ क्या सोच रही हैं? शक्तियों के बिना तो शिव भी नहीं है। शिव नहीं तो शक्तियाँ नहीं, शक्तियाँ नहीं तो शिव भी नहीं। बाप भी भुजाओं के बिना क्या कर सकता। तो पहली भुजायें कौन? वाह रे मैं! अच्छा – ओमशान्ति।

24-4-83

रूहानी पर्सनैलिटी

कुमारों की भट्टी में प्राण अव्यक्त बापदादा के उच्चारें हूए मधुर महावाक्य

आज बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं प्रति प्रत्यक्ष जीवन का प्रमाण देने वाले बच्चों से मिलने आये हैं। कुमार सो ब्रह्माकुमार, तपस्वी कुमार, राजऋषि कुमार, सर्व त्याग से भाग्य प्राप्त करने वाले कुमार ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं का आज विशेष संगठन है। कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन गाई जाती है। लेकिन ब्रह्माकुमार डबल शक्तिशाली कुमार है। एक तो शारीरिक शक्ति दूसरी आत्मिक शक्ति। साधारण कुमार शारीरिक शक्ति वा विनाशी आक्यूपेशन की शक्ति वाले हैं। ब्रह्माकुमार अविनाशी ऊंचे ते ऊंचे मास्टर सर्वशक्तिवान के आक्यूपेशन के शक्तिशाली हैं। आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे वह कर सकती है। ब्रह्माकुमारों का

संगठन विश्व परिवर्तक संगठन है। सभी अपने को ऐसे शक्तिशाली समझते हो? अपने को पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया हुआ अधिकारी आत्मा समझते हो? ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है पवित्र कुमार। ब्रह्मा बाप ने दिव्य जन्म देते “पवित्र भव, योगी भव” यही वरदान दिया। ब्रह्मा बाप ने जन्मते ही बड़ी माँ के रूप में पवित्रता के प्यार से पालना की। माँ के रूप से सदा पवित्र बनो, योगी बनो, श्रेष्ठ बनो बाप समान बनो, विशेष आत्मा बनो, सर्वगुण मूत्र बनो, ज्ञान मूत्र बनो, सुख शान्ति स्वरूप बनो, रह रोज यह लोरी दी। बाप के याद की गोदी में पालन किया। सदा खुशियों के झूले में झुलाया। ऐसे मात पिता के श्रेष्ठ बच्चे ब्रह्माकुमार वा कुमारी हैं। ऐसा स्मृति का समर्थ नशा रहता है! ब्रह्माकुमार के विशेष जीवन के महत्व को सदा याद रखते हो? सिर्फ नामधारी ब्रह्माकुमार तो नहीं? अपने आपको श्रेष्ठ जीवनधारी ब्रह्माकुमार समझते हो? सदा यह याद रहता है कि विश्व की विशाल स्टेज पर पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी हैं। वा सिर्फ घर में वा सेवाकेन्द्र पर वा दफ्तर में पार्ट बजाने वाले हैं। हर कर्म करते विश्व की आत्मायें हमें देख रही हैं यह स्मृति में रहता है? विश्व की आत्मायें जिस नज़र से आप सबको देखती हैं यही विशेष पार्टधारी अर्थात् हीरो पार्टधारी हैं, उसी प्रमाण हर कर्म करते रहते हो? वा यह याद रहता कि साधारण रूप से आपस में बोल रहे हैं, चल रहे हैं!

ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को प्युरिटी की तरफ आकर्षित करेगी। और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी की रायल्टी देने से छुड़ायेगी। रायल्टी के दोनों ही अर्थ होते हैं। इसी रायल्टी के अनुसार भविष्य रायल फैमली में आ सकेंगे। तो चेक करो ऐसी रायल्टी और पर्सनैलिटी जीवन में अपनाई है। यूथ ग्रुप पर्सनैलिटी को ज्यादा बनाती है ना! तो अपनी रूहानी पर्सनैलिटी अविनाशी पर्सनैलिटी अपनाई है? जो भी देखे हरेक ब्रह्माकुमार और कुमारी से यह पर्सनैलिटी अनुभव करे। शरीर की पर्सनैलिटी वह तो आत्माओं को देहभान में लाती है और प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है। तो विशेष कुमार ग्रुप को अब क्या सेवा करनी है? एक तो अपने जीवन परिवर्तन द्वारा आत्माओं की सेवा, अपने जीवन के द्वारा आत्माओं को जीयदान देना। स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रूहानी रायल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हों। सदा बाप का परिचय देने वाले वा बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दण्ड बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। किसने बनाया? बनाने वाला सदा दिखाई दे। जब भी कोई वन्दरफुल वस्तु को देखते हैं वा वन्दरफुल परिवर्तन देखते हैं तो सबके मन से, मुख से यही आवाज़ निकलता है कि किसने बनाई वा यह परिवर्तन कैसे हुआ। किस द्वारा हुआ। यह तो जानते हो ना। इतना बड़ा परिवर्तन जो कौड़ी से हीरा बन जाए तो सबके मन में बनाने वाला स्वतः ही याद आयेगा। कुमार ग्रुप भाग-दौड़ बहुत करता है। सेवा में भी बहुत भाग दौड़ करते हो ना। लेकिन सेवा के क्षेत्र में भाग दौड़ करते बैलेन्स रखते हो? स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स सदा रहता है। बैलेन्स नहीं होगा तो सेवा की भाग दौड़ में माया भी बुद्धि की भाग दौड़ करा देती है।

बैलेन्स से कमाल होती है। बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा में भी कमाल होगी। नहीं तो बाहरमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव स्वभाव की धमाल में आ जाते हो। तो सदा सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है। यह बैलेन्स सदा स्व में और सेवा में उन्नति को प्राप्त कराता रहेगा। कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कुमार जीवन के परिवर्तन का प्रभाव जितना दुनिया पर पड़ेगा उतना बड़ों का नहीं। कुमार ग्रुप गवर्मेन्ट को भी अपने परिवर्तन द्वारा प्रभु परिचय दे सकते हो। गवर्मेन्ट को भी जगा सकते हो। लेकिन वह परिक्षा लेंगे। ऐसे ही नहीं मानेंगे। तो ऐसे कुमार तैयार है! गुप्त सी.आई.डी. आपके पेपर लेंगे कि कहाँ तक विकारों पर विजयी बनें हैं। आप सबके नाम गवर्मेन्ट में भेजे? ५०० कुमार भी कोई कम थोड़े ही हैं। सबने लेजर में अपना नाम और एड्रेस भरा है ना। तो आपकी लिस्ट भेजें? सभी सोच रहे हैं पता नहीं कौन से सी.आई.डी. आयेंगे! जान बूझ कर क्रोध दिलायेंगे। पेपर तो प्रैक्टिकल लेंगे ना। प्रैक्टिकल पेपर देने लिए तैयार हो? बापदादा के पास सबका हां और ना फिल्म की रीति से भर जाता है। यह लक्ष्य रखो कि ऐसा रूहानी आत्मिक शक्तिशाली यूथ ग्रुप बनावें जो विश्व को चैलेन्ज करे कि हम रूहानी यूथ ग्रुप विश्व शान्ति की स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी हैं। और इसी सहयोग द्वारा विश्व परिवर्तन करके दिखायेंगे। समझा क्या करना है। ऐसा पक्का ग्रुप हो। ऐसे नहीं आज चैलेन्ज करे और कल स्वयं ही चेन्ज हो जाएं। तो ऐसा संगठन तैयार करो। मैजारटी नये-नये कुमार हैं। लेकिन लास्ट सो फास्ट जाकर दिखाओ। बैलेन्स की कमाल से विश्व को कमाल दिखाओ। अच्छा –

ऐसे सदा स्व परिवर्तन द्वारा सर्व का परिवर्तन करने वाले, अपने जन्म-सिद्ध वरदान वा अधिकार, ‘योगी भव, पवित्र भव’ को सदा जीवन में अनुभव कराने वाले, सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी द्वारा अन्य आत्माओं को बाप तरफ आकर्षित कराने वाले, अविनाशी आक्यूपेशन के नशे में रहने वाले, मात पिता की रेष्ठ पालना का परिवर्तन द्वारा रिटर्न देने वाले ऐसे रूहानी रायल्टी वाली विशेष आत्माओं को बाप दादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ :-

(१) सदा अपने को डबल लाइट अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त हल्के समझते हो? हल्के-पन की निशानी क्या है? हल्का सदा उड़ता रहेगा। बोझ नीचे ले आता है। सदास्वयं को बाप के हवाले करने वाले सदा हल्के रहेंगे। अपनी जिम्मेवारी बाप को दे दो अर्थात् अपना बोझ बाप को दे दो तो स्वयं हल्के हो जायेंगे। बुद्धि से सरेन्द्र हो जाओ। अगर बुद्धि से सरेन्द्र होंगे तो और कोई बात बुद्धि में नहीं आयेगी। बस सब कुछ बाप का है, सब कुछ बाप में है तो और कुछ रहा ही नहीं। जब रहा ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी कोई पुरानी गली, पुराने रास्ते रह तो नहीं गये हैं! बस एक बाप, एक ही याद का रास्ता, इसी रास्ते से मंजिल पर पहुँचो।

(२) सदा खुशी के झूले में झूलने वाले हो ना। कितना बढ़िया झूला बापदादा से प्राप्त हुआ है। यह झूला कभी टूट तो नहीं जाता। याद और सेवा की दोनों रस्सियाँ टाइट हैं तो झूला सदा ही एकरस रहता है। नहीं तो एक रस्सी ढीली, एक टाइट तो झूला हिलता रहेगा। झूला हिलेगा तो झूलने वाला गिरेगा। अगर दोनों रस्सियाँ मज़बूत हैं तो झूलने में मनोरंजन होगा। अगर गिरे तो मनोरंजन के बजाए दुःख हो जायेगा। तो याद और सेवा दोनों रस्सियाँ समान रहें, फिर देखो ब्राह्मण जीवन का कितना आनंद अनुभव करते हो। सर्वशक्तिवान बाप का साथ है, खुशियों का झूला है और चाहिए ही क्या।

ओम् शान्ति।

27-4-83

दृष्टि तथा वृत्ति परिवर्तन के लिए युक्तियाँ

कुमारों की भट्टी में प्राण अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज बापदादा सर्व पुरुषार्थियों का संगठन देख रहे हैं। इसी पुरुषार्थी शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है। पुरुषार्थी अर्थात् पुरुष अर्थात् रथी। किसका रथी है? किसका पुरुष है? इस प्रकृति का मालिक अर्थात् रथ का रथी। एक ही शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ तो क्या होगा! सर्व कमजोरियों से सहज पार हो जायेंगे। पुरुष प्रकृति के अधिकारी हैं न कि अधीन है। रथी रथ को चलाने वाला है न कि रथ के अधीन हो चलने वाला। अधिकारी सदा सर्वशक्तिवान बाप की सर्वशक्तियों के अधिकारी अर्थात् वर्से के अधिकारी वा हकदार है। सर्वशक्तियाँ बाप प्रापटी हैं और प्रापटी का अधिकारी हरेक बच्चा है। यह सर्व शक्तियों का राज्य भाग्य बापदादा सभी को जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में देते हैं। जन्मते ही यह स्वराज्य सर्व शक्तियों का, अधिकारी स्वरूप के स्मृति का तिलक, और बाप के स्नेह में समाये हुए स्वरूप के रूप में दिलतख्त, सभी को जन्म लेते ही दिया है। जन्मते ही विश्व कल्याण के सेवा का ताज हर बच्चे को दिया है। तो जन्म के अधिकार का तख्त, तिलक, ताज और राज्य सबको प्राप्त है ना। ऐसे चारों ही प्राप्तियों की प्राप्ति स्वरूप आत्मार्थ कमजोर हो सकती हैं? क्या यह चार प्राप्तियाँ सम्भाल नहीं सकते हैं? कभी तीलक मिट जाता, कभी तख्त छूट जाता, कभी ताज के बदले बोझ उठा लेते। व्यर्थ कखपन की टोकरी उठा लेते। नाम स्वराज्य है लेकिन स्वयं ही राजा के बदले अधीन प्रजा बन जाते। ऐसा खेल क्यों करते हो? अगर ऐसा ही खेल करते रहेंगे तो सदा के राज्य भाग्य के अधिकार के संस्कार अविनाशी कब बनेंगे? अगर इसी खेल में चलते रहे तो प्राप्ति क्या होगी! जो अपने आदि संस्कार अविनाशी नहीं बना सकते वह आदिकाल के राज्य अधिकारी कैसे बनेंगे। अगर बहुतकाल के योद्धेपन के ही संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते-करते समय बिताया, आज जीत कल हार। अभी-अभी जीत अभी-अभी हार। सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं तो इसको क्षत्रिय की निशानी में देखो अन्तर है। यादगार चित्रों में उनको कमान दिखाया है, उनको मुरली दिखाई है। मुरली वाले अर्थात् मास्टर मुरलीधर बन विकारों रूप सांप को विषैले बनने के बजाए विष समाप्त कर शैया बना दी। कहाँ विष वाला सांप और कहाँ शैया! इतना परिवर्तन किससे किया? मुरली से। ऐसे परिवर्तन करने वाले को ही विजयी ब्राह्मण कहा जाता है। तो अपने से पूछो मैं कौन?

सभी ने अपनी-अपनी कमजोरियों को सच्चाई से स्पष्ट किया है। उस सच्चाई की मार्क्स तो मिल जायेंगी लेकिन बापदादा देख रहे थे कि अभी तक जबकि अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति नहीं आई है, विश्व परिवर्तक कब बनेंगे! अभी दृष्टा हो, दृष्टि द्वारा देखने वाले दृष्टा, दृष्टि क्यों विचलित करते? दिव्य नेत्र से देखते हो वा इस चमड़ी के नेत्रों से देखते हो? दिव्य नेत्र से सदा स्वतः ही दिव्य स्वरूप ही दिखाई देगा। चमड़े की आखें चमड़े को देखती। चमड़ी को देखना चमड़ी का सोचना यह किसका काम है! फरिश्तो का? ब्राह्मणों का? स्वराज्य अधिकारियों का? तो ब्राह्मण हो या कौन हो? नाम बोले क्या?

सदैव हरेक नारी शरीरधारी आत्मा को शक्ति रूप, जगत माता का रूप, देवी का रूप देखना यह है दिव्य नेत्र से देखना। कुमारी है, माता है, बहन है, सेवाधारी निमित्त शिक्षक हे, लेकिन है कौन? शक्ति रूप। बहन भाई के सम्बन्ध में भी कभी-कभी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो जाती है। इसलिए सदा शक्ति रूप हैं। शिव शक्ति हैं। शक्ति के आगे अगर कोई आसुरी वृत्ति से आते तो उनका क्या हाल होता है, वह तो जानते हो ना। हमारी टीचर नहीं शिव शक्ति है। ईश्वरीय बहन है इससे भी ऊपर शिव शक्ति रूप देखो। मातायें वा बहनें भी सदा अपने शिव शक्ति स्वरूप स्थित रहें। मेरा विशेष भाई, विशेष स्टूडेंट नहीं। वह शिव शक्ति है और आप महावीर

हो। लंका को जलाने वाले पहले स्वयं के अन्दर रावण वंश को जलाना है। महावीर की विशेषता क्या दिखाते हैं? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? एक राम दूसरा न कोई। चित्र देखा है ना। तो हर भाई महावीर है, हर बहन शक्ति है। महावीर भी राम का है, शक्ति भी शिव की है। किसी भी देहधारी को देख सदा मस्तक के तरफ आत्मा को देखो। बात आत्मा से करनी है वा शरीर से? कार्य व्यवहार में आत्मा कार्य करता है वा शरीर? सदा हर सेकेण्ड शरीर में आत्मा को देखो। नज़र ही मस्तक मणी पर जानी चाहिए। तो क्या होगा? आत्मा आत्मा को देखते स्वतः ही आत्मअभिमानि बन जायेंगे। है तो यह पहला पाठ ना! पहला पाठ ही पक्का नहीं करेंगे, अल्फ को पक्का नहीं करेंगे तो बे की बादशाही कैसे मिलेगी। सिर्फ एक बात की सदा सावधानी रखो। जो भी करना है श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ बनना है। तो हर बात में दृढ़ संकल्प वाले बनो। कुछ भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ परिवर्तन करना ही है। इसमें पुरुषार्थी शब्द को अलबेले रूप में यूज नहीं करो। पुरुषार्थी हैं, चल रहे हैं, कर रहे हैं, करना तो है, यह अलबेलेपन की भाषा है। उसी घड़ी पुरुषार्थी शब्द को अलबेले रूप में यूज नहीं करो। पुरुषार्थी है, चल रहे हैं, कर रहे हैं, करना तो है, यह अलबेलेपन की भाषा है। उसी घड़ी पुरुषार्थी शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। पुरुष हूँ, प्रकृति धोखा दे नहीं सकती। यह सब प्रकार की कमजोरियाँ अलबेलेपन की निशानियाँ हैं। महावीर तो पहाड़ को भी सेकेण्ड में हथेली पर रख उड़ने वाला है। अर्थात् पहाड़ को भी पानी के समान हल्का बनाने वाला है। छोटी-छोटी परिस्थितियाँ क्या बात हैं! फिर तो ऐसे महावीर को कहेंगे चीटी से घबराने वाले। क्यों करें, हो जाता है। यह महावीर के बोल हैं? समझदार यह नहीं कहेंगे कि क्या करें चोर आ जाता है। समझदार बार-बार धोखा नहीं खाते। अलबेले बार-बार धोखा खाते हैं। सेफटी के साधन होते हुए अगर कार्य में नहीं लगाते तो उसको क्या कहेंगे? जानता हूँ कि नहीं होना चाहिए लेकिन हो रहा है, इसको कौन सी समझदारी कहेंगे!

दृढ़ संकल्प वाले बनो। परिवर्तन करना ही है, कल भी नहीं, आज। आज भी नहीं अभी। इसको कहा जाता है महावीर। राम के आज्ञाकारी। आज तो मिलने का दिन था फिर भी बच्चों ने मेहनत की है तो मेहनत का फल रसपान्ड देना पड़ा। लेकिन इन कमजोरियों को साथ ले जाना है? दी हुई चीज फिर वापिस तो नहीं लेनी है ना! जबरदस्ती आ जावे तो भी आने नहीं देना। दुश्मन को आने दिया जाता है क्या? अटेन्शन, चेकिंग यह डबल लाक, याद और सेवा यह दूसरा डबल लाक सबके पास है ना। तो सदा यह डबल लाक लगा रहे। दोनों तरफ लाक लगाना। समझा! एक तरफ नहीं लगाना। खितीरी तो स्थूल सूक्ष्म बहुत हुई है। डबल खातिरी हुई है ना। जैसे दीदी दादी वा निमित्त बनी हुई आत्माओं ने दिल से खातिरी की है तो उसके रिटर्न में सब दीदी दादी को खातिरी देकर जाना कि हम अभी से सदा के विजयी रहेंगे। सिर्फ मुख से नहीं बोलना, मन से बोलना। फिर एक मास के बाद इन फोटो वालों को देखेंगे कि क्या कर रहे हैं। किससे भी छिपाओ लेकिन बाप से तो छिपा नहीं सकेंगे। अच्छा –

सदा दृढ़ संकल्प द्वारा सोचा और किया दोनों को समान बनाने वाले, सदा दिव्य नेत्र द्वारा आत्मिक रूप को देखने वाले, जहाँ देखें वहाँ आत्मा ही आत्मा देखें, ऐसे अर्थ स्वरूप पुरुषार्थी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

ओम् शान्ति।

30-4-83

परम पूज्य बनने का आधार

परम पूज्य, महान् आत्मा बनाने वाले श्रेष्ठ पद की प्राप्ति कराने वाले शिव बाबा बोले:-

सभी मधुबन महान तीर्थ पर मेला मनाने के लिए चारों ओर से पहुँच गये हैं। इसी महानी तीर्थ के मेले की यादगार अभी भी तीर्थ स्थानों पर मेले लगते रहते हैं। इसी समय का हर श्रेष्ठ कर्म का यादगार चरित्रों के रूप में, गीतों के रूप में अभी भी देख और सुन रहे हो। चैतन्य श्रेष्ठ आत्मायें अपना चित्र और चरित्र देख सुन रही हैं। ऐसे समय पर बुद्धि में क्या श्रेष्ठ संकल्प चलता है? समझते हो ना कि हम ही थे, हम ही अब हैं। और कल्प-कल्प हम ही फिर होंगे। यह ‘‘फिर से’’ की स्मृति और नालेज और किसी भी आत्मा को, महान आत्मा को, धर्म आत्मा को वा धर्म आत्मा को वा धर्म पिता को भी नहीं है। लेकिन आप सब ब्राह्मण आत्माओं को इतनी स्पष्ट स्मृति है वा स्पष्ट नालेज है जैसे ५००० वर्ष की बात कल की बात है। कल थे आज हैं फिर कल होंगे। तो आज और कल इन दोनों शब्दों में ५००० वर्ष का इतिहास समायो हुआ है। इतना सहज और स्पष्ट अनुभव करते हो! कोई होंगे वा हम ही थे, हम ही हैं! जड़ चित्रों में अपने चैतन्य श्रेष्ठ जीवन का साक्षात्कार होता है? वा समझते हो कि यह महारथियों के चित्र हैं, वा आप सबके हैं? भारत में ३३ करोड़ देवताओं को नमस्कार करते हैं अर्थात् आप श्रेष्ठ ब्राह्मण सो देवताओं के वंश के भी वंश, उनके भी वंश, सभी का पूजन नहीं तो गायन तो करते ही हैं। तो सोचो जो स्वयं पूर्वज हैं उनहों का नाम कितना श्रेष्ठ होगा! और पूजन भी पूर्वजों का कितना श्रेष्ठ होगा। ९ लाख का भी गायन है। उससे आगे १६ हजार का गायन है फिर १०८ का है फिर ८ का है। उससे आगे युगल दाने का है। नम्बरवार हैं ना। गायन तो सभी का है क्योंकि जो भाग्य विधाता बाप के बच्चे बने, इस भाग्य

के कारण उन्हीं का गायन और पूजन दोनों होता है लेकिन पूजन में दो प्रकार का पूजन है। एक है प्रेम की विधि पूर्वक पूजन और दूसरा है सिर्फ नियम पूर्वक पूजन। दोनों में अन्तर हैं ना। तो अपने से पूछो मैं कौन सी पूज्य आत्मा हूँ। पहले भी सुनाया था कि कोई-कोई भक्त, देवता नाराज न हो जाए इस भय से पूजा करते हैं। और कोई-कोई भक्त दिखावा मात्र भी पूजा करते हैं। और कोई-कोई समझते हैं भक्ति का नियम वा फर्ज निभाना है। चाहे दिल हो या न हो लेकिन निभाना है। ऐसे फर्ज समझ करते हैं। चारों ही प्रकार के भक्त किसी न किसी प्रकार से बनते हैं। यहाँ भी देखो देव आत्मा बनाने वाले ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं ना। नम्बरवन पूज्य सदा सहज स्नेह से और विधि पूर्वक याद और सेवा वा योगी आत्मा, दिव्यगुण धारण करने वाली आत्मा बन चल रहे हैं। चार सबजेक्ट विधि और सिद्धि प्राप्त किये हुए हैं। दूसरे नम्बर के पूज्य विधि पूर्वक नहीं लेकिन नियम समझ करके करेंगे चार ही सबजेक्ट पूरे लेकिन विधि सिद्धि के प्राप्ति स्वरूप हो करके नहीं। लेकिन नियम समझकर चलना ही है, करना ही है, इसी लक्ष्य से जितना कायदा उतना फायदा प्राप्त करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वह दिल कास्नेह स्वतः और सहज बनाता है। और नियम पूर्वक वालों को कभी सहज कभी मुश्किल लगता। कभी मेहनत करनी पड़ती और कभी मुहब्बत की अनुभूति होती। नम्बरवन लवलीन रहते, नम्बर दो लव में रहते। नम्बर तीसरा मैजारटी समय चारों ही सबजेक्ट दिल से नहीं लेकिन दिखावा मात्र करते हैं। याद में भी बैठेंगे – नामीग्रामी बनने के भाव से। ऐसे दिखावा मात्र सेवा भी खुब करेंगे। जैसा समयवैसाअल्पकाल का रूप भी धारण कर लेंगे लेकिन दिमाग तेज और दिल खाली। नम्बर चौथा सिर्फ डर के मारे कोई कुछ कह न दे कि यह तो है ही लास्ट नम्बर का वा यह आगे चल नहीं सकता, ऐसे कोई इस नजर से नहीं देखे। ब्राह्मण तो बन ही गये और शूद्र जीवन भी पसन्द नहीं और ब्राह्मण जीवन में विधि पूर्वक चलने की हिममत नहीं इसलिए मजबूरी मजधार में आ गये। ऐसे मजबूरी वा डर के मारे चलते ही रहते। ऐसे कभी-कभी अपने श्रेष्ठ जीवन का अनुभव भी करते हैं इसलिए इस जीवन को छोड़ भी नहीं सकते। ऐसे को कहेंगे चौथे नम्बर का पूज्य आत्मा। तो उन्हीं की पूजा कभी-कभी और डर के मारे मजबूरी भक्त बन निभाना है, इसी प्रमाण चलती रहती। और दिखावा वाले की भी पूजा दिल से नहीं लेकिन दिखावा मात्र होती। इसी प्रमाण चलते रहते। तो चार ही प्रकार के पूज्य देखे हैं ना। जैसा अभी स्वयं बनेंगे वैसे ही सतयुग त्रेता की रायल फैमली वाप्रजा उसी नम्बर प्रमाण बनेगी और द्वापर कलियुग में ऐसे ही भक्त माला बनेगी। अभी अपने आप से पूछो मैं कौन! वा चारों में ही कभी कहाँ कभी कहाँ चक्र लगाते हो। फिर भी भाग्य विधाता के बच्चे बने, पूज्य तो जरूर बनेंगे। नामीग्रामी अर्थात् श्रेष्ठ पूज्य १६ हजार तक नम्बरवार बन जाते हैं। बाकी ९ लाख लास्ट समय तक अर्थात् कलियुग के पिछाड़ी के समय तक थोड़े बहुत पूज्य बन जाते हैं। तो समझा गायन तो सबका होता है। गायन का आधार है भाग्य विधाता बाप का बनना। और पूजन का आधार है चारों सबजेक्ट में पवित्रता, स्वच्छता, सच्चाई, सफाई। ऐसे पर बापदादा भी सदा स्नेह के फूलों से पूजन अर्थात् श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और पूजन अर्थात् श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और विश्व भी वाह-वाह के नगाड़े बजाए उन्हीं की मन से पूजा करेगा। और भक्त तो अपना ईष्ट समझ दिल में समायेंगे। तो ऐसे पूज्य बने हो? जब है ही परमपिता। सिर्फ पिता नहीं है लेकिन परम है तो बनायेंगे भी परम ना! पूज्य बनना बड़ी बात नहीं है लेकिन परम पूज्य बनना है।

बापदादा भी बच्चों को देख हर्षित होते हैं। मुहब्बत में मेहनत को महसूस न कर पहुँच जाते हैं। अभी तो रेस्ट हाउस में आ गये ना! तन-मन दोनों के लिए रेस्ट हैं ना! रेस्ट माना सोना नहीं। सोना बनने की रेस्ट में आये हैं। पारसपुरी में आ गये हो ना। जहाँ संग ही पारस आत्माओं का है, वायुमण्डल ही सोना बनाने वाला है। बातें ही दिन रात सोना बनने की हैं। अच्छा –

ऐसे सदा परम पूज्य आत्माओं को, सदा विधि द्वारा श्रेष्ठ सिद्धि को पाने वाले, सदा महान बन महान आत्मायें बनाने वाले, स्वयं को सदा सहज और स्वतः योगी निरन्तर योगी स्नेह सम्पन्न योगी अनुशासन करने वाले, ऐसी सर्व श्रेष्ठ आत्माओं को, चारों ओर के आकारी रूपधारी समीप बच्चों को, ऐसे साकारी आकारी सर्व सम्मुख उपस्थित हुए बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते। दीदी-दादी जी से:- सभी परमपूज्य हो ना! पूजा अच्छी हो रही है ना! बापदादा को तो अनन्य बच्चों पर नाज है। बाप को नाज है और बच्चों में राज है। जो राजयुक्त हैं उन बच्चों पर बाप को सदा नाज है। राजयुक्त, योगयुक्त, गुण युक्त... सबका बैलेन्स रखने वाले सदा बाप की ब्लैसिंग की छाया में रहने वाले। ब्लैसिंग की छाया में रहने वाले। ब्लैसिंग की सदा ही वर्षा होती रहती है। जन्मते ही यह ब्लैसिंग की वर्षा शुरू हुई है और अन्त तक इसी छत्रछाया के अन्दर गोल्डन फूलों की वर्षा होती रहेगी। इसी छाया के अन्दर चले हैं, पले हैं और अन्त तक चलते रहेंगे। सदा ब्लैसिंग के गोल्डन के फूलों की वर्षा। हर कदम बाप साथ है अर्थात् ब्लैसिंग साथ है। इसी छाया में सदा रहे हो (दादी से) शुरू से अथक हो अथक भव का वरदान है इसलिए करते भ्रष्टी नहीं करते, यह बहुत अच्छा। फिर भी अव्यक्त होते समय जिम्मेवारी का ताज तो डाला है ना। इनको (दीदी को) साकार के साथ-साथ सिखाया और आपको अव्यक्त होने समय सेकेण्ड में सिखाया। दोनों को अपने-अपने तरीके से सिखाया। यह भी ड्रामा का पार्ट है। अच्छा!

विदाई के समय ६.३० बजे सुबह :- संगमयुग की सब घड़ियाँ गुडमार्निंग ही हैं। क्योंकि संगमयुग पूरा ही अमृतवेला है। चक्र के हिसाब से संगमयुग अमृतवेला हुआ ना। तो संगमयुग का हर समय गुडमार्निंग ही है। तो बापदादा आते भी गुडमार्निंग में हैं जाते भी

गुडमार्निंग में हैं। क्योंकि बाप आता है तो रात से अमृतवेला बन गया। तो आते भी अमृतवेले में हैं और जब जाते हैं तो दिन निकल आता है लेकिन रहता अमृतवेले में ही है, दिन निकलता तो चला जाता है। और आप लोग सवेरा अर्थात् सतयुग का दिन ब्रह्मा का दिन, उसमें राज्य करते हो। बाप तो न्यारे हो जायेंगे ना। तो पुरानी दुनिया के हिसाब से सदा ही गुडमार्निंग है। सदा ही शुभ है और सदा शुभ रहेगा। इसलिए शुभ सवेरा कहें, शुभ रात्रि कहें शुभ दिन कहें सब शुभ ही शुभ है। तो सभी को कलियुग के हिसाब से गुडमार्निंग और संगमयुग के हिसाब से गुडमार्निंग तो डबल गुडमार्निंग। अच्छा – ओमशान्ति।

प्रश्न :- ब्राह्मण जीवन में मुख्य फाउन्डेशन कौन सा है ?

उत्तर :- स्मृति ही ब्राह्मण जीवन में फाउन्डेशन है। स्मृति का सदा अटेन्शन। स्मृति सदा समर्थ रहे तो सदा विजयी हैं। जैसे शरीर के लिए श्वास फाउन्डेशन है ऐसे ब्राह्मण जीवन के लिए स्मृति फाउन्डेशन है, सदा स्मृति रहें – यह ब्राह्मण जन्म विशेष जन्म है, साधारण नहीं। ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ ऊंचे पार्टधारी हैं। तो ऊंचे पार्टधारी का हर संकल्प, हर बोल विशेष, साधारण नहीं हो सकता।

ओम् शान्ति।

2-5-83

दोषी माया नहीं

ज्ञान के सागर, सर्वशक्तिवान शिव बाबा बालक सो मालिक बच्चों प्रति बोले:-

आज बापदादा सारे संगठन में विशेष उन आत्माओं को देख रहे हैं जो ज्ञान और योग के स्वरूप बन मास्टर रचयिता की स्टेज पर सदा स्थित रहते हैं। ज्ञानी और योगी तो सभी अपने को कहलाते लेकिन ज्ञानी तू बाप समान आत्मा, योगी तू बाप समान आत्मा इसमें नम्बरवार हैं। बाप समान अर्थात् मास्टर रचता की पोजीशन में सदा स्थित रहते। इस मास्टर रचता के सहज आसन पर स्थित हुई शक्तिशाली आत्मा के आगे सारी रचना दासी के रूप में, सेवा में सहयोगी बन जाती है। मास्टर रचता सेकेण्ड में अपने शुद्ध संकल्प रूपी आर्डर से जो वायुमण्डल बनाने चाहे वह बना सकते हैं। जैसा वायुब्रेशन फैलाने चाहें वैसे फैला सकते हैं। जिस शक्ति को आह्वान करें वह शक्ति सहयोगी बन जाती। जिस आत्मा को जो अप्राप्ति है वह जानकर सर्व प्राप्तियों का मास्टर दाता बन उन आत्माओं को दे सकते हैं। ऐसे शक्तिशाली मास्टर रचता सदा सहज आसनधारी कहाँ तक बने हैं यह देख रहे थे। क्या देखा, नम्बरवार तो सब हैं ही। लेकिन ऐसे भी मास्टर रचता कहलाने वाले देखे जो अपनी रचना, संकल्प शक्ति के एक व्यर्थ संकल्प से घबरा जाते हैं। डर जाते हैं। स्मृति का प्रेशर लो हो जाता है। इसलिए उमंग उत्साह की धड़कन बहुत स्लो (Slow) हो जाती है। दिलशिकस्त का पसीना निकल आता है ना! ऐसा होता है ना! क्या करें, कैसे करें, इसमें परेशान हो जाते हैं। गलती एक सेकेण्ड की है। अपने मास्टर रचता की पोजीशन से नीचे आ जाते हैं। जहाँ पोजीशन समाप्त हुआ वा विस्मृत हुआ उसी सेकेण्ड माया की सैना आपोजीशन करने पहुँच जाती है। आह्वान कौन करता माया को? स्वयं नीचे आ जाते, पोजीशन की सीट को छोड़ देते तो खाली स्थान को माया अपना बना लेती है। इसलिए माया कहती दोषी मैं नहीं, लेकिन आह्वान करते हैं तो मैं पहुँच जाती। समझा! अच्छा आज तो मिलने का दिन है, फिर सुनायेंगे कि और क्या-क्या करते हैं।

सर्व मास्टर रचता, सहज आसनधारी, सदा बालक सो मालिकपन के स्मृति स्वरूप, सदा बाप समान ज्ञान युक्त, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

कुमारियों से :- कुमारियों ने अपना फैसला कर लिया है? क्योंकि कुमारी जीवन ही फैसले का समय होता है। फैसले के समय पर बाप के पास पहुँच गई, कितनी भाग्यवान हो! अगर थोड़ा भी आगे जीवन चल जाती तो पिंजरे की मैना बन जाती। तो क्या बनना है – पिंजरे की मैना या स्वतन्त्र पंछी? कुमारी तो स्वतन्त्र पंछी है। कुमारियों को नौकरी करने की भी क्या आवश्यकता है! क्या बैंक बैलेन्स करना है? लौकिक बाप के पास रहेंगी तो भी दो रोट्टी मिल जायेंगी, अलौकिक के पास रहेंगी तो भी कोई कमी नहीं, फिर नौकरी क्यों करती? क्या सेन्टर पर रहने में डर लगता है! अगर कहते ममता है तो भी दुःख की लहर आ सकती है। वैसे भी कुमारी घर में नहीं रहती। इसी नशे में रहो हम हैं बाप के तख्तनशीन। सतयुग का राज्य तख्त भी इस तख्त के आगे कुछ नहीं है। सदा ताज और तिलकधारी हैं, इस स्मृति में रहो। अगर कोई को बैठने के लिए बढ़िया आसन मिल जाए तो छोड़ेगा कैसे! बनना है तो श्रेष्ठ ही बनना है, हाँ तो हाँ। मरना है तो धक से। यही मरना मीठा है। अगर लक्ष्य पक्का है तो कोई भी हिला नहीं सकता। लक्ष्य कच्चा है तो कई बहाने कई बातें आयेंगी जो रूकावट डालेंगी। इसलिए सदा दृढ़ संकल्प करना।

अधरकुमारों के ग्रुप से :- सभी प्रकार की मेहनत से बाप ने छुड़ा दिया है ना? भक्ति की मेहनत से छूट गये और गृहस्थी जीवन की मेहनत से भी छूट गये। गृहस्थी जीवन में ट्रस्टी बन गये तो मेहनत खत्म हो गई ना। और भक्ति का फल मिल गया तो भक्ति का भटकना अर्थात् मेहनत खत्म हो गई। भक्ति का फल खाने वाले हैं, ऐसा समझते हो? वैसे भक्ति का फल ज्ञान कहते हैं, लेकिन आप लोगों को भक्ति का फल स्वयं ज्ञान दाता मिल गया। तो भक्ति का फल भी मिला और गृहस्थी के जो दुःख, अशान्ति, के

झंझट थे वह भी खत्म हो गये, दोनों से मुक्त हो गये। जीवनबन्ध से जीवनमुक्त आत्मायें हो गईं। जब कोई बन्धन से मुक्त हो जाता है तो खुशी में नाचता है। आप भी बन्धनमुक्त आत्मायें सदा खुशी में नाचते रहो। बस गीत गाओ और खुशी में नाचो। यह तो सहज काम है ना! सदा याद रखो जीवनमुक्त आत्मायें हैं। सब बन्धन समाप्त हो गये, मेहनत से छूट गये, मुहब्बत में आ गये। तो सदा हल्के होकर उड़ो। पुजारी से पूज्य, दुखी से सुखी, काँटों से फूल बन गये, कितना अन्तर हो गया! अभी पुरानी कलियुगी दुनिया के कोई भी संस्कार न रहें। अगर पुरानी दुनिया का कोई भी पुराना संस्कार रह गया तो वह अपनी तरफ खींच लेगा। इसलिए सदा नई जीवन नये संस्कार। श्रेष्ठ जीवन है तो श्रेष्ठ संस्कार चाहिए। श्रेष्ठ संस्कार हैं ही स्व कल्याण और विश्व कल्याण करना। ऐसे संस्कार भर गये हैं? स्व कल्याण और विश्व कल्याण के सिवाए और कोई संस्कार होंगे तो इस जीवन में विघ्न डालेंगे। इसलिए पुराने संस्कार सब समाप्त। सदा यह स्मृति में रहे कि मैं रूहानी गुलाब हूँ। रूहानी गुलाब अर्थात् सदा रूहानी खुशबू फैलाने वाले। जैसे रूहे गुलाब अपनी खुशबू देता है, उसका रंग रूप भी अच्छा, खुशबू भी अच्छी सबको अपने तरफ आकर्षित भी करता है ऐसे आप भी बाप के बगीचे के रूहानी गुलाब हो। गुलाब सदा पूजा में अर्पण किया जाता है। रूहानी गुलाब भी बाप के आगे अर्पित होते हैं। यह यज्ञ सेवाधारी बनना भी अर्पण होना है। अर्पण होना यह नहीं कि एक स्थान पर रहना। कहाँ भी रहें लेकिन श्रीमत पर रहें। अपनापन जरा भी मिक्स न हो। ऐसे अपने को भाग्यवान खुशबूदार रूहानी गुलाब समझते हो ना! सदा इसी स्मृति में रहो कि हम अल्लाह के बगीचे के रूहानी गुलाब – यही नशा सदा रहे। नशे में रहो और बाप के गुणों के गीत गाते रहो। इस ईश्वरीय नशे में जो भी बोलेंगे उससे भाग्य बनेगा।

सदा अपने को विजयी पाण्डव समझ कर चलो। पाण्डवों की विजय कल्प-कल्प की प्रसिद्ध है। ५ होते भी विजयी थे। विजय का कारण, बाप साथी था। जैसे बाप सदा विजयी है वैसे बाप का बनने वाले भी सदा विजयी। यही स्मृति में रहे कि हम सदा विजयी रत्न हैं तो यह बात भी बड़ा नशा और खुशी दिलाती है। जब पाण्डवों की कहानी सुनते हो तो क्या लगता है? यह हमारी कहानी है। निमित्त एक अर्जुन कहने में आता है, दुनिया के हिसाब से ५ हैं, लेकिन हैं सदा विजयी। यही स्मृति सदा ताज़ी रहे। ऐसी स्पष्ट स्मृति हो जैसे कल की बात है। सभी ने घर बैठे भाग्य ले लिया है ना! घर बैठे ऐसा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ भाग्य मिला है जो अन्त तक गाया जायेगा। बाप के घर में आये, अपने घर में आये, मनाया, खाया, खेला...वैसे भी जब थक जाते हैं तो रेस्ट में चले जाते हैं। यहाँ भी बिजनेस करके, नौकरी करके, थक कर आते हो और यहाँ आते ही कमल बन जाते हो। बाप के सिवाए और कोई दिखाई नहीं देता, रेस्ट मिल जाती है। सिवाए एक बाप से मिलने, उनकी बातें सुनने, याद करने...बस यही काम है। तो थकावट उतरी, रिफ्रेश हो गए ना। चाहे दो घण्टे के लिए भी कोई आवे तो भी रिफ्रेश हो जाते हैं क्योंकि यह स्थान ही रिफ्रेश होने का है। यहाँ आना ही रिफ्रेश होना है। अच्छा –

विदाई के समय :- एक-एक बच्चा एक दो से अधिक प्रिय है। सभी में अपनी-अपनी विशेषतायें हैं। चाहे लास्ट नम्बर भी है लेकिन बाप का तो बच्चा ही है। कैसे भी बच्चे हैं लेकिन फिर भी त्याग और भाग्य तो पा लिया है ना। इसलिए सभी अपने को बाप के प्रिय समझो। चाहे नम्बरवार हैं लेकिन याद-प्यार तो सबको मिलता है। बापदादा सबको सिक व प्रेम से याद-प्यार देते हैं। सिक व प्रेम सभी के लिए एक जैसा है। सभी सिकीलधे स्नेही, बाप को भुजायें हो। इसलिए अपनी भुजायें तो जरूर प्रिय लगेंगी ना। अपनी भुजायें अप्रिय होती हैं क्या! लास्ट नम्बर भी तो कोटो में कोई है ना! तो कोटो से तो प्रिय हो ही गये ना! अच्छा –

ओम् शान्ति ।

4-5-83

सदा एक मत, एक ही रास्ते से एकरस स्थिति

सदा श्रीमत दाता, सदा विश्व कल्याणकारी अपने बच्चों के प्रति बोले:-

आज बापदादा वतन में सर्व बच्चों के प्रति रूह-रिहान करते मुस्करा रहे थे। किस बात पर? सभी बच्चे विश्व में चैलेन्ज करते हैं मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा सेकेण्ड में प्राप्त कर सकते हैं। यह चैलेन्ज करते हो ना! वैसे अनुभव से देखो दिव्य बुद्धि जो हर ब्राह्मण को बर्थडे की गिफ्ट मिली है ब्राह्मण, नाम-संस्कार हुआ और दिव्य बुद्धि की गाडली गिफ्ट बापदादा द्वारा मिली। उस दिव्य बुद्धि के आधार पर सोचो ज्ञान भी सेकेण्ड का है। रचयिता और रचना। अल्फ और बे। और योग भी सेकेण्ड का है – मैं बाप का, बाप मेरा। दिव्यगुणधारी बनना यह भी सेकेण्ड की बात है। क्योंकि जैसा जन्म जैसा कुल वैसी धारणा स्वतः और सहज होती है! ईश्वरीय कुल है तो गुण अर्थात् धारणायें भी ईश्वरीय होंगी ना। ब्राह्मण जन्म ऊंचे ते ऊंचा जन्म। तो धारणा भी ऊंची होंगी ना। तो धारणा भी सेकेण्ड की है। जैसा बाप वैसे बच्चे। और सेवा भी सेकेण्ड की बात है। अनुभवी बन खजानों के अधिकारी बन बाप का परिचय देना है! जो अपने पास है वह दूसरों को देना सेकेण्ड की और सहज बात है। तो बापदादा देख रहे थे कि सेकेण्ड की बात में इतना समय चलते हुए, चाहे दो मास के ब्राह्मण हैं वा बहुत समय के ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण अर्थात् सेकेण्ड में वर्से के अधिकारी। तो

सेकेण्ड के अधिकारी फिर अधीन क्यों बन जाते। क्या अपने अधिकार के स्थिति रूपी सीट पर सेट होना नहीं आता। आराम की सीट को छोड़ हलचल की बेआरामी में क्यों आते! सीट छोड़ते क्यों जो बार-बार सेट होने की मेहनत करते। सीट से उतरे और सर्वशक्तियों की प्राप्ति गई। श्रेष्ठ अर्थात् स्थिति पर सेट होने से अधिकारी-पन की अथार्टी है। जब सीट छोड़ दी तो अथार्टी कहाँ से आई। सीट से उतर अपनी शक्तियों को आर्डर करते इसलिए वह आर्डर मानती नहीं। फिर सोचते हैं, हूँ तो मास्टर सर्वशक्तिवान लेकिन शक्तियाँ काम नहीं करती। क्या दास का आर्डर दास मानेगा वा मालिक का आर्डर दास मानेगा? और फिर चेहरा क्या बन जाता? जैसे कमजोर शरीर वाले का चेहरा पीला हो जाता है क्योंकि वह खून की शक्ति नहीं ऐसे कमजोर आत्मा उदास बन जाती। ज्ञान भी सुनेगा, सेवा भी करेगा लेकिन उदास रूप में। खुशी की शक्ति, सर्व प्राप्तियों की शक्ति खत्म हो जाती है। दास सदा उदास ही रहेगा। दास आत्मा की और क्या विशेष हंसाने वाली बातें होती हैं? छोटी सी बातों में बोलते कनप्यूज हो गये हैं, मूँझ गये हैं। जैसे आँखों की नज़र कम हो जाती है ना तो एक चीज़ के बजाए दो दो तीन तीन चीज़ें दिखाई देती हैं और उसी में कनप्यूज हो जाते हैं कि यह सही है या वह सही है। ऐसे कमजोर आत्मायें एक रास्ते के बजाए दूसरे रास्ते भी देखते हैं। एक श्रीमत के साथ-साथ और मतों भी दिखाई देती हैं। फिर सोचते कि यह करें वा वह करें। यह यथार्थ है वा वह यथार्थ है! जब है ही एक रास्ता, एक श्रेष्ठ मत तो यह करें, क्या करें यह क्वेश्चन ही नहीं। कनप्यूज क्यों नहीं होंगे, स्वयं ही दो बनाए दुविधा में आते हैं। तो यह विचित्र चाल देख बापदादा मुस्करा रहे थे। बापदादा कहते सीट पर स्थित रहो तो एकरस रहेंगे लेकिन चंचल बच्चे के समान बार-बार चक्कर लगाने के अभ्यासी फिर कहते माया का चक्र आ गया। कनप्यूज होने का कोई आधार ही नहीं है। लेकिन व्यर्थ, कमजोर संकल्पों के आधार ले लेते हैं। जब है ही व्यर्थ और कमजोर आधार तो फिर रिज़ल्ट क्या होगी! यह अटकेंगे यह लटकेंगे यह नीचे गिरेंगे। फिर चिल्लायेंगे बाबा मैं आपका हूँ, आप शक्ति दे दो। सीट पर सेट रहो तो ज्ञान सूर्य के शक्तियों की किरणें आपके सीट की छत्रछाया स्वतः ही, सदा ही प्राप्त है। सीट से नीचे उतर व्यर्थ वा कमजोरी के संकल्पों की दीवार खड़ी कर देते। व्यर्थ संकल्प एक नहीं आता। एक सेकेण्ड में एक से अनेक संकल्प पैदा हो जाते। और उसी ने अनेक ईंटों की दीवार बन जाती है। इसलिए ज्ञान सूर्य के शक्तियों की किरणें पहुँच नहीं सकतीं। और फिर कहते मदद नहीं मिलती, शक्ति नहीं आती। खुशी नहीं आती वा याद रहती नहीं। आ ही कैसे सकती! तो बापदादा पुराने नये जो ऐसा खेल करते हैं उन्होंने का खेल देख मुस्करा रहे थे। सेकेण्ड की बात को इना मुश्किल क्यों बना दिया है। एक रास्ता, एक मत उसको छोड़ मनमत, परमत उसको मिक्स क्यों करते हो! अपने कमजोरी के बनाये हुए रास्ते, ऐसे तो होता ही है, ऐसा तो चलता ही है – इन रास्तों का स्वयं ही बनाए फिर स्वयं ही भूल भूलैया के खेल में आ जाते हैं। मंजिल से दूर हो जाते हैं। ऐसे करते क्यों हैं? यह सोच रहे हो, हो जाता है, करते नहीं लेकिन हो जाता है। होता भी क्यों है? बीमारी क्यों आती है? बदपरहेज वा कमजोरी से। वा यह कहेंगे कि बीमारी आ जाती है? न कमजोर बने न मर्यादाओं की परहेज से वा मर्यादाओं की लकीर से बाहर आओ। अभी तक यही खेल करने है? विश्वकल्याण के ठेकेदार इतने बड़े आक्यूपेशन वाले और यह बच्चों के खेल खेलते, यह कब तक? विश्व आपका इन्तजार कर रहा है कि शान्ति के दूत आये की आये। हमारे देव हमारे ऊपर शान्ति की आशीर्वाद वा कृपा करने के लिए आये कि आये। जोर-जोर से चिल्ला के घण्टियाँ बजाते। कभी तो चिमटे भी बजाते हैं, नगाड़े बजाते हैं। आओ, आओ करके पुकारते हैं। ऐसी देव आत्मायें अगर अपने बचपन के खेल में रहेंगी तो उन्हीं की पुकार सुनेंगी कैसे। इसलिए पुकार सुनो और उपकार करो। समझा क्या करना है। अच्छा बाप भी समय का ख्याल रखता, आप लोग नहीं रखते।

ऐसे सदा श्रेष्ठ समझदार, सदा एक मत एक रास्ता पर चलने वाले, एकरस स्थिति में स्थित होने वाले, सदा सेकेण्ड के अधिकार को स्मृति में रख समर्थ आत्मा रहने वाले, व्यर्थ संकल्पों के खेल का समाप्त कर विश्व-कल्याण के श्रेष्ठ सेवाधारी – ऐसी महान आत्माओं सो देव आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

कुमारियों के साथ :- सभी कुमारियाँ अपने को शिव शक्तियाँ समझती हो? शक्तियाँ सदा कहाँ रहती हैं? शिव के साथ रहती हो ना! जो जिसके साथ रहते उसके संग का रंग तो उन पर जरूर लगेगा ना! तो जो बाप का गुण, जो बाप का कर्तव्य वही आपका है ना! बाप का कर्तव्य है सेवा, तो आप सभी सेवाधारी हो ना! सेवा करती हो या करनी है सदा यह लक्ष्य रखो कि बाप समान बनना है। हर बात में चेक करो कि यह बाप का कर्म वा बाप का संकल्प, बोल है। अगर है तो करो। नहीं तो परिवर्तन कर दो। क्योंकि साधारण कर्म आधाकल्प किया अभी तो बाप समान बनना है। सभी बाप समान विश्व सेवाधारी हो ना? हद के नहीं। हिम्मत अच्छी है। हिम्मत और उमंग में आगे बढ़ रही हो। उमंग उल्लास ही सदा आगे बढ़ता रहेगा।

सदा उमंग और उल्लास में रहने वाले हर बात में नम्बरवन होंगे। याद में भी नम्बरवन, ज्ञान, धारणा सेवा सबमें नम्बरवन। ऐसे हो? नम्बरवन उमंग उल्लास वाले घरों में कैसे रहेंगे! निर्बन्धन होंगे ना! सभी कौन हो? पिंजरे के पंछी हो वा स्वतन्त्र पंछी। पढ़ाई का पिंजरा है? माँ बाप का पिंजरा है? ऐसे पिंजरों में बंधने वाली को नम्बरवन कैसे कहेंगे। अभी निर्बन्धन हो जाओ। जो शक्तिशाली आत्मायें होंगी उनके आगे कोई भी कुछ कर नहीं सकता। जैसे तेज़ आग जल रही हो तो उसके आगे कोई भी आयेगा नहीं, दूर

भागेगा। आप भी योग अग्नि को ऐसा जगाओ जो कोई बन्धन डालने वाला सामने आ ही न सके। जैसे कोई जानवर को भगाना होता है तो आग जला देते हैं, आग के सामने कोई जानवर नहीं आ सकता। ऐसे लगन की अग्नि को तेज़ करो। अगर अभी तक बन्धन हैं तो लगन है लेकिन अग्नि नहीं बनी है। लगन है तब यहाँ पहुँची लेकिन लगन अग्नि बन जाए तो निर्बन्धन हो जाओ। लगन फुल फोर्स में हो। शक्तियाँ मैदान पर आओ। इतना बड़ा ग्रुप जो आया है तो जरूर कमाल करेगा ना! इतने हैन्डस निकल आवे तो वाह-वाह हो जाए। अच्छा!

ओम् शान्ति।

7-5-83

ब्राह्मणों का संसार बेगमपुर

बेगमपुर का बाहशाह बनाने वाले, सदा सुखदाता शिव बाबा बोले:-

आज बेगमपुर के बादशाह अपने मास्टर बेगमपुर के बादशाहों से मिलने आये हैं। यह संगमयुगी बादशाहों की सभा है। इसी बादशाही से भविष्य प्रालम्ब प्राप्त करते हैं। बापदादा देख रहे हैं कि सभी बचचे बेगम अर्थात् किसी भी प्रकार के गम अर्थात् दुख से परे, ऐसे बादशाह बने हैं! ब्राह्मणों का संसार बेगमपुर है। संगमयुगी ब्राह्मण संसार के अधिकारी आत्मायें अर्थात् बेगमपुर के बादशाह। संकल्प में भी गम अर्थात् दुख की लहर न हो – ऐसे बने हो? बेगमपुर के बादशाह सदा सुख की शैय्या पर सुखमय संसार में स्वयं को अनुभव करते हो? ब्राह्मणों के संसार वा ब्राह्मण जीवन में दुख का नाम निशान नहीं क्योंकि ब्राह्मणों के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। अप्राप्त दुख का कारण है प्राप्ति सुख का साधन है। तो सर्व प्राप्ति स्वरूप अर्थात् सुख स्वरूप! ऐसे सदा सुख स्वरूप बने हो? सुख के साधन-सम्बन्ध और सम्पत्ति यही विशेष हैं। सोचो – अविनाशी सुख, का सम्बन्ध प्राप्त है ना! सम्बन्ध में भी कोई एक सम्बन्ध की भी कमी होती है तो दुख की लहर आती है। ब्राह्मण संसार में सर्व सम्बन्ध बाप के साथ अविनाशी हैं। कोई एक सम्बन्ध की भी कमी है क्या? सर्व सम्बन्ध अविनाशी हैं तो दुख की लहर कैसे होगी। सम्पत्ति में भी सर्व खजाने वा सर्व सम्पत्ति का श्रेष्ठ खजाना ज्ञान धन है, जिससे सर्व धन की प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है। जब सम्पत्ति, सम्बन्ध सब प्राप्त हैं तो बेगमपुर अर्थात् संसार है। सदा सुख के संसार के बालक सो मालिक अर्थात् बादशाह हो। बादशाह बने हो कि अभी बन रहे हो? बापदादा बच्चों के दुख की लहर की बातें सुनकर वा देखकर क्या सोचते हैं? सुख के सागर के बच्चे, बेगमपुर के बादशाह फिर दुख की लहर कहाँ से आई! अवश्य सुख के संसार की बाउन्ड्री से बाहर चले जाते हैं। कोई न कोई आर्टीफिशल आकर्षण वा नकली रूप के पीछे आकर्षित हो गई और मर्यादा की लकीर अर्थात् सुख के संसार की बाउन्ड्री पार कर ली, तो कहाँ पहुँच गई? शोक वाटिका में। जब बाउन्ड्री के अन्दर हैं तो जंगल में भी मंगल है। त्याग में भी भाग्य है। बिन कोड़ी होते बादशाह हैं। बेगरी जीवन में भी प्रिन्स की जीवन है। ऐसा अनुभव है ना! संसार से परे मधुवन में आते हो तो क्या अनुभव करते हो? है छोटे से स्थान पर कोने में लेकिन पहुँचते ही कहते हो कि सतयुगी स्वर्ग से भी श्रेष्ठ संसार में पहुँच गये हैं। तो जंगल में मंगल अनुभव करते हो ना। सूखे पहाड़ों को हीरे जैसा श्रेष्ठ सुख का संसार अनुभव करते हो। संसार ही बदल गया, ऐसा अनुभव करते हो ना। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें जहाँ भी हों दुख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान। दुःख से न्यारे, बेगमपुर के बादशाह हो। तन के बीमारी के दुःख की लहर वा मन में व्यर्थ हलचल के दुःख की लहर वा विनाशी धन के अप्राप्ति की वा कमी के दुख की लहर, स्वयं के कमज़ोर संस्कार वा स्वभाव वा अन्य के कमज़ोर स्वभाव और संस्कार के दुःख की लहर वायुमण्डल वा वायुब्रेन्स के आधार पर दुख की लहर, सम्बन्ध सम्पर्क के आधार पर दुख की लहर, अपनी तरफ खींच लेता है! न्यारे हो ना! संसार बदल गया तो संस्कार भी बदल गये। स्वभाव बदल गया इसलिए सुखमय संसार के बन गये। वैसे तो बेगमपुर बन गये अर्थात् यह देह रूपी घर भी अपना नहीं। बेगमपुर हो गये ना। लेकिन बाप के सर्व खजानों के मालिक भी तो बन गये। स्वराज्य अधिकारी भी बन गये। ऐसा नशा खुशी रहती है? इसको ही कहा जाता है बेगमपुर के बादशाह। तो सभी बादशाह बैठे हो ना। बादशाही का हालचाल ठीक चल रहा है? सभी राज्य कारोबारी आपके आर्डर में चल रहे हैं? कोई भी आप बादशाहों को धोखा तो नहीं देता? जी हाजिर वा जी हज़ूर करने वाले सभी राज्य कारोबारी हैं? अपनी दरबार लगाते हो? राजाओं की तो दरबार लगती है – तो सभी दरबारी यथार्थ कार्य कर रहे हैं? खजानों से भण्डारे भरपूर हैं? इतने भण्डारे भरपूर हैं जो सदा महादानी बन दान करते रहो तो भी अखुट भण्डार हो। चेक करते हो? ब्रह्माकुमार तो बन ही गये, योगी तो बन ही गये, इस अलबेलेपन के नशे में चेकिंग तो नहीं भूल जाते हो? सदा अपने राज्य कारोबार की चेकिंग करो। समझा! चेकिंग करना तो आता है ना। मैजारटी पुराने अनुभवियों का संगठन है ना। अनुभवी अर्थात् अथार्टी वाले। कौन सी अथार्टी? स्वराज्य की अथार्टी। ऐसी अथार्टी वाले हो ना! अभी तो आज आये हो। चेकिंग कराने, सर्टीफिकेट लेने आये हो ना कि हम ठीक बादशाह हैं! सर्टीफिकेट लेकर जायेंगे ना कि कौन से राजे हैं – नामधारी हैं या कामधारी। यह सब शीशमहल में आपेही देख लेंगे। अच्छा –

सदा सुख के संसार में रहने वाले, बेगमपुर के बादशाहों को, सदा राज्य अधिकारी समर्थ आत्माओं को, सदा सर्व दुख की लहरों से न्यारे और सुखदाता बाप के प्यारे, ऐसे अनुभव की अथाही वाली श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते। दादियों से:- सभी बाप समान बच्चों को देख बापदादा हर्षित होते हैं। सदा समान आत्मायें अति प्यारी लगती हैं। तो यह सारा संगठन समान आत्माओं का है। बापदादा सदा समान बच्चों को साथी देखते हैं। विश्व की परिक्रमा लगाते तो भी साथ और बच्चों की रेख देख करने जाते तो भी साथ। सदा साथ ही साथ है इसलिए समान आत्मायें हैं ही सदा के योगी। योग लगाने वाले नहीं लेकिन हैं ही लवलीन। अलग ही नहीं हैं तो याद क्या करेंगे। स्वतः याद है ही। जहाँ साथ होता है तो याद स्वतः रहती है। तो समान आत्माओं की स्टेज साथ रहने की है। समाये हुए रहने की है। तो सदा हर कदम में आगे-आगे बच्चे, पीछे-पीछे बाप। हर कार्य में सदा आगे। बच्चे आगे हैं और बाप सकाश तो क्या लेकिन सदासाथ का अनुभव कराते हैं। जैसे बाप औरों को सकाश देते हैं वैसे समान बच्चे भी सकाश भी देने वाले हो गये। ऐसा संगठन है ना! विशेष मणकों की विशेष माला है। स्वतः तैयार हो रही है ना माला! तैयार करनी नहीं पड़ती लेकिन हो रही है। वैसे अगर नम्बर निकालें या नम्बर दें तो क्वेश्चन उठेंगे लेकिन स्वतः ही नम्बरवार सेट होते जा रहे हैं। अच्छा –

कुमारों के साथ अलग-अलग गुप से

१. गॉडली यूथ गुप। लौकिक रीति से वह यूथ गुप अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार कार्य कर रहे हैं लेकिन उन्हों का कार्य नुकसान करना है। आप लोगों का काम है स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी बनना। कभी कोई भी कारण वा विघ्न आये तो उसका निवारण सहज कर सकते हो? कुमार गुप में बापदादा की सदा उम्मीदें रहती हैं। इतने यूथ हिम्मत और उमंग रख सदा के विजयी बन जाएं तो विश्व में विजय का झण्डा उठाकर सारे विश्व में घूमें। सदा उड़ती कला में जा रहे हो, कोई रुकती कला वाला तो नहीं है। यूथ गुप अर्थात् सदा शक्तिशाली सेवा करने वाले। यूथ जो चाहे वह कर सकते हैं। वह विनाशकारी और आप स्थापना के कार्य वाले। वे अशान्ति मचाने वाले और आप शान्त स्वरूप हो। शान्ति फैलाने वाले हो। कुमारों के लिए तो बहुत तैयारी कर रहे हैं। ऐसे पक्के कुमार हों जो कभी हलचल में न आवें। ऐसे नहीं यहाँ नाम बाला हो और फिर वहाँ पुरानी दुनिया में चले जाएं। कई कुमार पहले बहुत उमंग उत्साह सेवा में चलते फिर थोड़ा भी टक्कर हुआ तो पुरानी दुनिया में चले जाते। छोड़ी हुई चीज़ फिर से जाकर लें तो अच्छा लगता है! आप सबने भी पुरानी दुनिया छोड़ दी है ना! अगर कोई रस्सी बंधी होगी तो हिलते रहेंगे। तो सदा अपने को गॉडली यूथ गुप समझो। इतने सब कुमार रिफ्रेश होकर खजानों से भरपूर होकर जायेंगे तो देखने वाले कहेंगे यह देवात्मा बनकर आ गये। ऐसा कोई कमाल का प्लैन बनाओ। यूथ को देखकर गवर्मेन्ट भी घबराती है। गवर्मेन्ट को भी रास्ता दिखाने के निमित्त आप लोग बनेंगे। कुमारों को सदा सेवा के शक्तिशाली प्लैन बनाने चाहिए। परन्तु याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहे। अच्छा – सदा निर्विघ्न रहने की गुडमार्निंग जब होगी तो निर्विघ्न होंगे ना! जब सतयुग गुडमार्निंग होगा तो निर्विघ्न होंगे। अभी निर्विघ्न बनने की गुडमार्निंग। शुभ दिन कहते हैं ना। शुभ प्रातः कहते ही शुभ प्रातः है। शुभ दिन है और शुभ रात्रि है। तो सदा निर्विघ्न अर्थात् शुभ। इसलिए निर्विघ्न भव की गुडमार्निंग। अच्छा –

विदाई के समय :- सतगुरु की कृपा आपका वर्सा बन गया। इसलिए कृपा करो, यह संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं। हो ही वृक्षपति के बच्चे। तो बृहस्पति की दशा, गुरु की कृपा सब स्वतः ही प्राप्त है। मांगने की आवश्यकता ही नहीं। मांगने से छूट गए, संकल्प करने से भी छुड़ा दिया। अभी मांगने का कुछ रहा है क्या! बाप के भी सिर के ताज हो गये। वह माँगेंगा क्या! तो वृक्षपति दिवस की, बृहस्पति के दशा की सदा ही बच्चों को बधाई सहित याद-प्यार।

ओमशान्ति।

9-5-83

ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार स्मृति, वृत्ति, और दृष्टि की स्वच्छता

स्वच्छ, पवित्र, श्रेष्ठ तथा पूज्य बनाने वाले, परम पवित्र अव्यक्त बापदादा बोले:-

आज बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों के श्रेष्ठ कर्म की रेखा देख रहे हैं। जिस कर्म की रेखा द्वारा ही वर्तमान और भविष्य तकदीर की लकीर खींची जा रही है। सभी ब्राह्मणों की कर्म रेखा वा कर्म कहानी वा कर्मों का खाता देख रहे थे। वैसे भाग्य विधाता बाप के कर्मों के गुह्य गति के ज्ञाता बाप के डायरेक्ट वर्से के अधिकारी बच्चे हैं। साथ-साथ स्वयं विधाता बापदादा ने सभी बच्चों को गोल्डन चांस दिया है कि विधाता के बच्चे हो इसलिए जो जितना भाग्य बनाना चाहे, जितना सर्व प्राप्ति सवरूप बनना चाहे, हरेक को सम्पूर्ण अधिकार है। अधिकार देने में नम्बर नहीं है, फ्रीडम है अर्थात् सम्पूर्ण स्वतन्त्रता है। और साथ-साथ ड्रामा अनुसार वर-दानी समय का भी सहयोग है। वह भी सभी को समान है। फिर भी इतना गोल्डन चांस मिलते, बेहद की प्राप्ति को भी नम्बरवार की

हृद में ला देते हैं। बाप भी बेहद का, वर्सा भी बेहद का, अधिकार भी बेहद का लेकिन लेने वाले नम्बरवार बन जाते हैं – ऐसा क्यों? इसके संक्षेप में दो कारण हैं। एक बुद्धि में स्वच्छता नहीं, क्लीयर नहीं। दूसरा हर कदम में सावधान नहीं अर्थात् केयरफुल नहीं। इन दो कारणों से नम्बरवार बन जाते हैं। मुख्य बात स्वच्छता की है। इसको ही पवित्रता वा पहले विकार पर जीत कहा जाता है। जब ब्राह्मण जीवन अपनाई तो ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार कहे, नवीनता कहे, अलौकिकता कहे, जीवन का श्रृंगार कहे, वह है ही पवित्रता। ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज ही है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ ज्ञान दाता की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी पवित्रता और मर्यादायें हैं। जन्म की वा जीवन की निशानी वह तो सदा कायम रखनी होती है ना। पवित्रता की पहली आधारमूर्त पाइंट है “स्मृति की पवित्रता”। मैं सिर्फ आत्मा नहीं लेकिन मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। आत्मा शब्द तो सभी कहते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मा सदा यही कहेंगे कि मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। श्रेष्ठ आत्मा हूँ। पूज्य आत्मा हूँ। विशेष आत्मा हूँ। यह स्मृति की ही पवित्रता आधार मूर्त है। तो पहला आधार मजबूत किया है? यह आक्यूपेशन सदा स्मृति में रहता है? जैसा आक्यूपेशन वैसा कर्म स्वतः होता है। पहले स्मृति की स्वच्छता चाहिए। उसके बाद वृति और दृष्टि। जब स्मृति में पवित्रता आ गई कि मैं पूज्य आत्मा हूँ तो पूज्य आत्मा का विशेष गायन क्या है? सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण। यही पूज्य आत्मा की क्वालिफिकेशन है। वह स्वतः ही स्वयं को और सर्व को किस दृष्टि से देखेंगे? चाहे अलौकिक परिवार में, चाहे लौकिक परिवार कहे वा लौकिक स्मृति में रहने वाली आत्मायें कहे, सभी के प्रति परम पूज्य आत्मायें हैं वा पूज्य बनाना है यही दृष्टि में रहे। पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमजोर है। और यह महा-महा-महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है कि यह सेवाधारी बहुत अच्छे हैं, यह शिक्षक बहुत अच्छी है। लेकिन अच्छाई क्या है? अच्छाई है ऊंची स्मृति और ऊंची दृष्टि की। अगर वह ऊंचाई नहीं तो अच्छाई कौन सी है। यह भी सुनहरी मृगमाया का रूप है, यह सर्विस नहीं है, सहयोग नहीं है लेकिन स्वयं को और सर्व को वियोगी बनाने का आधार है। यह बात बार-बार अटेन्शन रखो।

बाप द्वारा निमित्त बने हुए शिक्षक वा सेवा के सहयोगी बनी हुई आत्मायें चाहे बहन हो वा भाई हो, लेकिन सेवाधारी आत्माओं के सेवा के मुख्य लक्षण त्याग और तपस्या हैं, इसी लक्षण के आधार पर सदा त्यागी और तपस्वी की दृष्टि से देखो न कि दैहिक दृष्टि से। श्रेष्ठ परिवार है तो सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो। क्योंकि यह महापाप कभी प्राप्ति स्वरूप का अनुभव करा नहीं सकता। सदा ही कोई न कोई कर्म में, संकल्प में, सम्बन्ध-सम्पर्क में डिफेक्ट वा इफेक्ट इसी उतराई और चढ़ाई में चलता रहेगा। कभी भी परफेक्ट स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेगा। इसलिए सदा याद रखो पूज्य आत्मा के बदले पाप आत्मा तो नहीं बन गये। इसी एक विकार से और विकार स्वतः ही पैदा हो जाते हैं। कामना पूरी न हुई तो क्रोध साथी पहले आयेगा। इसलिए इस बाप को हल्का नहीं समझो। इसमें अलबेले मत बनो। बाहर से शुभ सम्बन्ध है, सेवा का सम्बन्ध है इस रायल रूप के पाप को बढ़ाओ मत। चाहे कोई भी दोषी हो इस पाप के, लेकिन दूसरे को दोषी बनाए स्वयं को अलबेले मत बनाओ। “मैं दोषी हूँ” जब तक यह सावधानी नहीं रखेंगे तब तक महापाप से मुक्त नहीं हो सकेंगे। किसी भी प्रकार का, मन्सा संकल्प का वा बोला का वा सम्पर्क का विशेष झुकाव होना यह लगाव की निशानी है। और कुछ नहीं करते हैं, सिर्फ बात करते हैं, यह बातों का झुकाव भी लगाव की परसेन्टेज है। चाहे सेवा के सहयोग की तरफ भी विशेष झुकाव है, यह भी लगाव है। और जब कोई भी इशारा मिलता है तो इशारे को इशारे से खत्म कर देना चाहिए। अगर जिद्द करते हो और सिद्ध करते हो, स्पष्टीकरण देने की कोशिश करते हो, इससे समझो स्पष्टीकरण अपने पाप की करते हो। बात की नहीं करते हो पाप की लकीर और लम्बी करते जाते हो। इसलिए जब है ही विश्व परिवर्तन के कार्य में तो स्व-परिवर्तन कर लेना यही समझदारी का काम है। अगर कुछ नहीं है तो नहीं कर दो ना। अर्थात् स्व परिवर्तन कर बात का नाम निशान खत्म कर दो। यह क्यों, ऐसा क्यों यह तो चलता ही है। यह वायुमण्डल की अग्नि में तेल डालना है। आग को भड़काना है। बात को बढ़ाना है। इसीलिए फुल स्टाप लगाना चाहिए। है वा नहीं है कि बहस में नहीं जाओ। लेकिन संकल्प, बोल और सम्पर्क में परिवर्तन लाओ। यह है विधि इस पाप से बचने की। समझा! ब्राह्मण परिवार में यह संस्कार नाम निशान मात्र न रहें। अच्छा फिर सुनायेंगे कि क्रोध महाभूत क्या है।

यही विशेष अटेन्शन देने की बातें हैं। जो भी आये हो विशेष बल भरने आये हो। किसी भी कमजोर संस्कार को सदा के लिए समाप्त करने आये हो तो कमजोर संस्कार समाप्ति समारोह करके जाना। यह समारोह मनायेंगे ना। है भी विशेष पुरानों का ग्रुप। आप लोग जब समारोह मनायेंगे तब नये भी उमंग उत्साह में आयेंगे। ऐसे नहीं कि हर वर्ष यह समारोह मनाना पड़े। एक बार का यह समारोह और फिर सम्पन्न समारोह! सदाकाल के लिए समाप्ति का समारोह मनायेंगे ना। इसमें मातायें भी आ जातीं, अधरकुमार भी आ जाते। ऐसे नहीं सिर्फ पाण्डव मनायेंगे। कुमारियाँ भी मनायेंगी, टीचर भी मनायेंगी। अधरकुमारियाँ भी मनायेंगी। सब मिलकर यह समारोह मनावें। ठीक है ना। कुमारियाँ शक्तियाँ है ना! तो शक्ति रूप का समारोह मनायेंगे ना। अच्छा –

सदा स्वयं प्रति शुभचिन्तक, सदा स्व-परिवर्तन के कार्य में पहले मैं इस पाठ में नम्बरवन आने वाले, सदा संकल्प, बोल और सम्पर्क में सर्व प्रति बेहद के स्मृति स्वरूप, सदा स्वच्छता और सावधानी में रहने वाले, ऐसे पवित्र पूज्य आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

कुमारों से:- सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी – ऐसे अनुभव करते हो? जो सदा साक्षी होगा वह सदा ही कर्म करते हर कदम उठाते कर्म के बन्धन से न्यारे और बाप के प्यारे तो ऐसे साक्षीपन अनुभव करते हो? कोई भी कर्मिन्द्रियाँ अपने बन्धन में नहीं बाँधे इसको कहा जाता है साक्षी। ऐसे साक्षी हो? कोई भी कर्म अपने बन्धन में बाँधता है तो उसको साक्षी नहीं कहेंगे। फँसने वाला कहेंगे। न्यारा नहीं कहेंगे। कभी आँख भी धोखा न दे। शारीरिक सम्बन्ध में आना अर्थात् आँख का धोखा खाना। तो कोई भी कर्मिन्द्रिय धोखा न दे। साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। महान आत्मायें भी नहीं, निमित्त आत्मायें भी नहीं लेकिन बाबा ही याद आये। कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मायें याद आती? सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो! किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए हर बात में बाबा बाबा याद रहे। कुमार डबल लाइट हैं, संस्कार स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं। इसको कहा जाता है हल्का। जितने हल्के होंगे उतना सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे। अगर ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो जरूर कोई बोझ है। तो बाबा बाबा का आधार ले उड़ते रहो। यही अविनाशी आधार है।

रूहानी यूथ ग्रुप शान्तिकारी, कल्याणकारी ग्रुप है। सदा विश्व में शान्ति स्थापना के कार्य में निमित्त है, वह अशान्ति फैलाने वाले और आप शान्ति फैलाने वाले। ऐसे अपने को समझते हो? यूथ ग्रुप में राजनीतिक लोगों की भी उम्मीदें हैं और बापदादा की भी उम्मीदें हैं। उम्मीदें पूरी करने वाले हो ना। बच्चे सदा बाप की उम्मीदें पूरी करने वाले होंगे। तो सफलता के सितारे बन गवर्मेन्ट तक यह आवाज बुलन्द करना कि हम विजयी रत्न हैं। अभी देखेंगे कि कौन से ग्रुप और कहाँ यह पहले झण्डा लहराते हैं। कभी भी अपनी शक्तियों को मिसयूज नहीं करना। सदा यह याद रखो कि हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। एक कमजोर तो एक के पीछे एक का सम्बन्ध है। हम जिम्मेवार हैं यह स्मृति सदा रहे। जो कर्म आप करेंगे आपको देख सब करेंगे इसलिए साधारण कर्म नहीं, सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले, सदा अचल रहने वाले।

सभी कुमार फर्स्ट नम्बर में आने वाले हो ना। फर्स्ट नम्बर एक होता है या इतने होते हैं? अच्छा फर्स्ट डिवीजन में आने वाले हो? फर्स्ट आने वाले की विशेषता क्या होती है वह जानते हो? फर्स्ट में आने वाले सदा बाप समान होंगे। समानता ही समीपता लाती है। समीप अर्थात् समान बनने वाले ही फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। तो बाप समान कब तक बनेंगे? जब विजय माला के नम्बर आउट हो जायेंगे फिर क्या करेंगे? डेट नहीं लेकिन अब की घड़ी। क्या इसमें मुश्किल है? कुमारों को कौन सी मुश्किल है? दो रोटी खाना है और बाप की सेवा में लगाना है, यही काम है ना। दो रोटी के लिए निमित्त मात्र कोई कार्य करते हो ना। करते हो, लगाव से तो नहीं करते हो ना! निमित्त कहने से नहीं होता, कुमार कहने से नहीं करते, स्वतन्त्र हैं। तो सदा लक्ष्य रहे बाप समान बनना है। जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट। औरों को देखते हो तो कमजोर होते हो, सी फादर, फालो फादर करना है। यही सदा याद रखो। स्वयं को सदा बाप की छत्रछाया के अन्दर रखो। छत्रछाया में रहने वाले सदा मायाजीत बन ही जाते हैं। अगर छत्र-छाया के अन्दर नहीं रहते, कभी अन्दर कभी बाहर तो हार होती है। छत्रछाया के अन्दर रहने वाले को मेहनत करनी पड़ती। स्वतः ही सर्व शक्तियों की किरणें उसे माया जीत बनाती हैं। एक बाप सर्व सम्बन्ध से मेरा है, यही स्मृति समर्थ आत्मा बना देती है। कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें निर्विघ्न आत्मायें हैं तो यहाँ हैं। सब विघ्न विनाशक बनो। हलचल में आने वाले नहीं, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले। शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले बनो। सदा विजय का झण्डा लहराता रहे। ऐसा विशेष नक्शा तैयार करो। जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है। लेकिन गिराने में युनिटी नहीं करना, चढ़ाने में। सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है – यही लक्ष्य रहे। कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी वफादार। हर कदम में फालो फादर करने वाले। जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह बच्चों के, इसको कहा जाता है फालो फादर। जो बाप ने किया है वही रिपीट करना है, कापी करना है। इस कापी करने से फुल मार्क्स मिल जायेंगी। वहाँ कापी करने से मार्क्स कट जाती और यहाँ फुल मार्क्स मिल जाती। तो जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो कि बाप समान है। अगर नहीं है तो चेन्ज कर दो। अगर है तो प्रैक्टिकल में लाओ। कितना सहजमार्ग है। जो बाप ने किया वह आप करो। ऐसे सदा बाप को फालो करने वाले ही सदा मास्टर सर्वशक्तिवान् स्थिति में स्थित रहते हैं। बाप का वर्सा ही है सर्वशक्तियाँ और सर्व-गुण। तो बाप के वारिस अर्थात् सर्वशक्तियोंके, सर्वगुणों के अधिकारी। अधिकारी से अधिकार जा कैसे सकते। अगर अलबेले बने तो माया चोरी कर लेगी। माया को भी सबसे अच्छे ग्राहक ब्राह्मण आत्मायें लगती हैं। इसलिए वह भी अपना चांस लेती है। आधा

कल्प उसके साथी रहे, तो अपने साथियों को ऐसे कैसे छोड़ेगी। माया का काम है आना, आपका काम है जीत प्राप्त करना, घबराना नहीं। शिकारी के आगे शिकार आता है तो घबरायेंगे क्या? माया आती है तो जीत प्राप्त करो घबराओ नहीं। अच्छा!

अहमदाबाद, होस्टल में रहने वाली कुमारियों का ग्रुप :- कुमारी जीवन अर्थात् स्वतन्त्र जीवन, इस स्वतन्त्रता से क्या मिलता है और श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले से क्या मिलता है – यह सदा स्मृति में रहता है? या समझती हो कि हम तो कालेज में पढ़ने वाली लड़कियाँ हैं। सदा यह स्मृति में रखो जैसा बाप वैस मैं। बाप क्या है? सेवाधारी है। तो सभी सेवा करती हो ना! सभी कुमारियाँ बाप की माला के मणके हो? पक्का? और किसके गले की माला तो नहीं बनेंगी। जो बाप के गले की माला बन गई वह दूसरों के बले की माला नहीं बन सकती। क्या संकल्प किया है? और कहाँ स्वप्न में भी नहीं जा सकती। ऐसे पक्के? एक बाप के बने और सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। सर्व अधिकार छोड़कर दो पैसों के पीछे जायेंगे क्या! वह दो पैसे भी तब मिलते जब दो चमाट लगाते हैं। पहले दुःख की, अशान्ति की चमाट लगती फिर दो रोटी खाते। ऐसी जीवन तो पसन्द नहीं है ना? कुमारी जीवन वैसे भी भाग्यवान है और भी डबल भाग्यवान बन गई। अभी सर्व प्रैक्टिकल पेपर देंगी ना! वह कागज़ वाला पेपर नहीं। सदा शिव शक्ति है, कम्बा-इन्ड हैं – यह स्मृति सदा रखना। कुमारियों का कहाँ-न=कहाँ जाना तो होता ही है। अगर ऐसा श्रेष्ठ घर मिल जाए तो और क्या चाहिए। कुमारियाँ सोचती हैं अच्छा घर, भरपूर घर मिले। यह कितना भरपूर घर है जहाँ कोई अप्राप्त नहीं। ऐसा भाग्य तो सबको मिलना चाहिए। वाह मेरा भाग्य... यही गाते गाओ। जैसे चन्द्रमा समान बनो। जैसे स्वयं के भाग्य का सितारा चमका है ऐसे ही सदा औरों के भाग्य का सितारा चमकाओ। तो सभी आपको बार बार आशीर्वाद देंगे।

सभी कुमारियाँ स्कालरशिप लेंगी ना। स्कालरशिप लेना मानाविजय माला में आना। ऐसा तीव्र पुरुषार्थ हो जो विजयमाला में आ जाओ। इतनी पालना जो ले रहे हो उसका रिटर्न तो देंगी ना। पालना का रिटर्न है बाप समान बनना, स्कालरशिप लेना। तो सदा यह दृढ़ संकल्प रखो कि विजयी बन विजय माला के मणके बनने वाले हैं। सभी इस जीवन से सन्तुष्ट हो? कभी वह जीवन खाना, पीना, घूमना – यह याद तो नहीं आता। दूसरों को देखकर यह नहीं आता कि हम भी थोड़ा टेसट तो करें। वह जीवन गिरने की जीवन है – यह जीवन चढ़ने की जीवन है। चढ़ने से गिरने की तरफ कौन जायेगा। सदा एवररेडी रहो। अपने रीति से सदा तैयार रहो। कोई पढ़ाई की रीति से शौक का बन्धन नहीं। जहाँ कुमारियों का सगंठन है वहाँ सेवा में वृद्धि है ही। जहाँ शुद्ध आत्मायें हैं वहाँ सदा ही शुभ कार्य है। सभी आपस में संस्कार मिलाने की सबजेक्ट में पास हो ना। कोई खिटखिट नहीं, कहाँ भी दृष्टि वृत्ति नहीं! एक बाप दूसरा न कोई... विशेष कुमारियों को इस बात में सर्टीफिकेट लेना है। जैसे नाम है बाल ब्रह्मचारिणी... वैसे संकल्प भी ऐसा पवित्र हो – इसको कहा जाता है स्कालरशिप लेना। फिर राइटहैण्ड हो। सदा एक बाप दूसरा न कोई – ऐसी शिव शक्तियाँ हैं। यही याद रखना तो किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी। अच्छा।

टीचर्स के साथ :- सभी निमित्त सेवाधारी, अपने को निमित्त समझकर चलते हो? निमित्त समझने वाले सदा हल्के और सदा सफलतामूर्त होते हैं। जितना हल्के होंगे उतना सफलता जरूर होगी। कभी सेवा कम होती कभी ज्यादा तो बोझ तो नहीं लगता है ना। भारी तो नहीं होते, क्या होगा, कैसे होगा। कराने वाला करा रहा है और मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रही हूँ – यही सेवाधारी की विशेषता है। सदा स्व के पुरुषार्थ से और सेवा से सन्तुष्ट रहो तब ही जिन्हों के निमित्त बनते हैं उन्हों में सन्तुष्टता होगी। सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को रखना यही विशेषता है। अच्छा – ओमशान्ति।

(विदाई के समय गुडमार्निंग)

सर्व चारों ओर की श्रेष्ठ आत्माओं को वा विशेष आत्माओं को बापदादा मधुबन वरदान भूमि में सम्मुख देखते हुए याद प्यार दे रहे हैं। और सभी से गुडमार्निंग कर रहे हैं। गुडमार्निंग अर्थात् सारा दिन ऐसा ही शुभ और श्रेष्ठ रहे। सारादिन याद प्यार की पालना में रहें। यह याद प्यार ही श्रेष्ठ पालना है। इसी पालना में सदा रहो और यही ईश्वरीय याद और प्यार सभी आत्माओं को देते हुए उन्हों की भी श्रेष्ठ पालना करो। याद प्यार पालना का झूला है। जिस झूले में पालना होती है। और गुडमार्निंग शक्तिशाली अमृत कहो, वा औषधि कहो, वा श्रेष्ठ भोजन कहो, जो भी कहो। ऐसे शक्तिशाली बनाने की गुडमार्निंग है और पालना का याद प्यार झूला है। इसी झूले में सदा रहे और इसी शक्ति में सदा रहे। ऐसे साद इसी स्वरूप में रहने की सर्व बच्चों को गुडमार्निंग। अच्छा।

11-5-83

युवा वर्ग के प्रति अव्यक्त बापदादा का सन्देश

सदा रहम दिल, दया के सागर अव्यक्त बापदादा बोले :-

आज बापदादा हंस आसनधारी होलीहंसों की सभी देख रहे हैं। हर एक श्रेष्ठ आत्मा होलीहंस सदा एक बाप दूसरा न कोई इसी लगन में मगन आत्मायें – यही स्थिति हंस आसन है। ऐसे होलीहंसों को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। हर होलीहंस ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा, विश्व कल्याणकारी है। हर एक के दिल में दिलाराम बाप की याद समाई हुई है। हर एक अपने वर्तमान और भविष्य

को बनाने में लगन से लगे हुए हैं। ऐसा श्रेष्ठ संगठन सारे कल्प में सिवाए संगमयुग के कभी नहीं देख सकते। एक ही परिवार, एक ही लगन, एक ही लक्ष्य, ऐसा फिर कभी देखेंगे? बापदादा को भी बच्चों पर नाज़ है। इतना बड़ा परिवार वा संगठन और हरेक श्रेष्ठ बाप के बच्चे बनने कारण बाप के वर्से के अधिकारी हैं। तो इतने सब अधिकारी बच्चों को देख बाप को भी खुशी है। यह एक एक बच्चा कुल का दीपक है। विश्व परिवर्तन करने के निमित्त आत्मा है। हर एक चमकता हुआ सितारा विश्व को रोशनी देने वाला है। हर एक के भाग्य की अविनाशी लकीर मस्तक पर दिखाई दे रही है। ऐसा श्रेष्ठ संगठन विश्व में एक मत, एक राज्य, एक धर्म की स्थापना करने के दृढ़ संकल्पधारी हैं। बापदादा युवा-वर्ग को देख रहे थे। चाहे कुमार हैं, चाहे कुमारी हैं लेकिन हरेक के मन में उमंग उत्साह है कि हम सभी अपने विश्व को वा देश को वा सुख शान्ति के लिए भटकती हुई आत्माओं अर्थात् अपने भाई बहनों को सुख ओर शान्ति का अधिकार अवश्य दिलायेंगे। अपने विश्व को फिर से सुख शान्तिमय संसार बनायेंगे। यही दृढ़ संकल्प है ना। इतना बड़ा संगठन क्या नहीं कर सकता है! एक तो श्रेष्ठ आत्मायें, पवित्र आत्मायें हो तो पवित्रता की शक्ति है, दूसरा मास्टर सर्व-शक्तिवान होने के कारण सर्वशक्तियाँ साथ हैं। संगठन की शक्ति है, साथ-साथ त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हो कि अनेक बार हम विश्व परिवर्तक बने हैं। इसलिए कल्प-कल्प के विजयी होने के कारण अब भी विश्व परिवर्तन के कार्य में विजय निश्चित है। होंगे या नहीं होंगे यह क्वेश्चन ही नहीं है। निश्चयबुद्धि विजयी – ऐसे अनुभव करते हो ना कि सुख का संसार अभी आया कि आया। विश्व के मालिकों को विश्व का राज्य निश्चित ही प्राप्त हुआ पड़ा है। युवा वर्ग क्या करेगा? अपने देश के वा विश्व के राज्य नेताओं को यह खुशखबरी सुनाओ, जिस बात के आप स्वप्न देख रहे हो कि ऐसा होना चाहिए, वह चाहिए की चाह हम पूर्ण कर दिखायेंगे। देश से सिर्फ एक महँगाई नहीं लेकिन डबल महँगाई मिटाकर दिखायेंगे। क्योंकि महँगाई का आधार है चरित्र की महँगाई। जब चरित्र की महँगाई वा चरित्र के दुःख अशान्ति की गरीबी मिट जायेगी तब स्वतः ही सर्व आत्मायें धनवान तो क्या लेकिन राज्य अधिकारी बन जायेंगी। यही शुभ उम्मीदें विश्व की निमित्त आत्माओं को पूर्ण कर दिखाओ। अपने देश को श्रेष्ठ बनाकर दिखायेंगे, ऐसा माला-माल बनायेंगे जो न कोई अप्राप्ति हो और न अप्राप्ति के कारण सर्व समस्यायें हों। यही दृढ़ संकल्प सभी को सिर्फ सुनाओ नहीं लेकिन परिवर्तन का सैम्पुल बनकर दिखाओ। क्योंकि सब तरफ से विश्वास दिलाने के नारे सबने बहुत सुने हैं। इतने सुने हैं जो सुनकर विश्वास ही निकल गया है। ऐसे कहने वाले बहुत देख-देख सत्य को भी धोखा समझ रहे हैं। इसलिए सिर्फ कहना नहीं है, मुख बोले नहीं। लेकिन आपके जीवन की श्रेष्ठता बोले। आप एक-एक होलीहंस की पवित्रता की झलक चलन से दिखाई दे। आप सबकी श्रेष्ठ स्मृति की समर्थी ना उम्मीद आत्माओं में उम्मीदों की समर्थी पैदा करे। समझा – युवा वर्ग को क्या करना है। जो आज के नेतायें युवा वर्ग से विनाशकारी कर्तव्यों के कारण घबराते हैं। तो आप सभी विश्व कल्याणकारी उन्हीं को यह सिद्ध करके दिखाओ कि इसी देश के हम युवा वर्ग अपने भारत देश को विश्व में सर्वश्रेष्ठ देश है। भारत विश्व के लिए आध्यात्मिक रोशनी देने का लाइट हाउस है। क्योंकि इस श्रेष्ठ कर्तव्य के कराने वाला कौन है, उसकी पहचान कर लें फिर तो कोई क्वेश्चन उठने की बात ही नहीं। अपने जीवन से, कर्तव्य से, बाप की परिचय कराओ। इतनी हिम्मत है ना। कुमारियाँ क्या समझती हैं? जब दुर्गा की पूजा करते हैं तो अपने को भाग्यवान समझते हैं। यहाँ कितनी दुर्गायें हैं! एक-एक शिव शक्ति कमाल कर दिखाने वाली है ना। वो ही हो ना जिन शक्तियों की घर-घर में पूजा कर रहे हैं। तो हे शिव शक्तियाँ! अपने भक्तों को फल तो दो। वो बेचारे फल चढ़ाते-चढ़ाते थक गये हैं। इतने जो फल चढ़ाये हैं उसका रिटर्न भक्ति का फल तो उन्हीं को देंगी ना। भक्तों पर तरस नहीं आता। पाण्डवों की भी पूजा हो रही है। आजकल एक महावीर हनुमान की बहुत पूजा होती है और दूसरा विघ्न विनाशक गणेश की पूजा हो रही है। सब शक्ति की इच्छा से ही भक्त कर रहे हैं। ऐसे भक्त आत्माओं के सर्व शक्तियों का फल दो। सदा के लिए विघ्नों से पार करने का सहज रास्ता बताओ। सभी पुकार से छुड़ाए प्राप्ति स्वरूप बनाओ – ऐसी सेवा युवा वर्ग करके दिखओ। समझा।

अच्छा –

सदा अपने श्रेष्ठ जीवन द्वारा अनेकों की जीवन बनाने वाले, सर्व भारतवासियों की श्रेष्ठ, सुखी संसार की शुभ कामना पूर्ण करने वाले, घर-घर में श्रेष्ठ चरित्र का दीपक जगाने वाले, सदा अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति कराने वाले – ऐसे दृढ़ संकल्पधारी निश्चित विजयी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

कुमारों में सदा बापदादा की उम्मीदें हैं। कुमार विश्व को बदल सकते हैं। अगर सभी कुमार एक दृढ़ संकल्प वाले बन आगे बढ़ते चलें तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कमाल करने वाले कुमार हो ना। देखना, बापदादा के पास आटोमेटिक फोटो निकल जाता है। दृढ़ संकल्प वाले कुमार हो ना। कुमारों में शारीरिक शक्ति भी बहुत है इसलिए डबल कार्य कर सकते हो। स्थापना के कार्य में बहुत अच्छे सहयोगी बन सकते हो। कुमारों की बुद्धि में एक ही बात सदा रहती है ना कि मेरा बाबा और मेरी सेवा और कोई बात नहीं। जिनकी बुद्धि में सदा बाबा और सेवा है वह सहज ही मायाजीत बन जाते हैं। सिर्फ कुमारों को एक बात अटेन्शन में रखनी है – सदा अपने को बिजी रखो, खाली नहीं। शरीर और बुद्धि दोनों से बिजी रहो। बिजीमैन बनो, बिजनेसमैन नहीं। जैसे कर्म की दिनचर्या सेट करते हो ऐसे बुद्धि की भी दिनचर्या सेट करो। अभी यह सोचना है, यह करना है, दिनचर्या सेट होगी तो उसी प्रमाण

बिजी हो जायेंगे। बिजी रहने वाले को किसी भी रूप से माया वार नहीं कर सकती। बुद्धि को बिजी करने के साधन सदा अपनाओ – जैसे शरीर को बिजी करने के साधन हैं, ऐसे बुद्धि से सदा याद में, नशे में बिजी रहो। ऐसी दिनचर्या बनाने आती है? सदाकाल के लिए नियम बना दो। जैसे और नियम बने हैं, यह भी एक नियम बनाओ, बस करना ही है, इसी दृढ़ निश्चय से जो कमाल करने चाहे वह कर सकते हो। कुमार हैं बापदादा के कर्तव्य के सितारे। सेवा के निमित्त तो कुमार बनते हैं ना। भागदौड़ भी कुमार करते हैं। जो भी सेवायें होती हैं उसमें कुमारों का विशेष पार्ट होता है – तो विशेष पार्ट लेने वाली विशेष आत्मायें हैं, यह नशा रखो, इसी खुशी में रहो। तो देखेंगे कुमार ग्रुप क्या करके दिखाते हैं। कुछ करके दिखाना, सिर्फ कहकर नहीं। सेवा के उमंग उत्साह वाले हैं, निश्चय बुद्धि है। अचल हैं, हिलने वाले नहीं हैं। ऐसे ही अचल आत्मायें औरों को भी अचल बनाकर दिखाओ।

महादानी बनकर दान करते चलो। जब स्वयं का भण्डारा भरपूर है तो बहुतों को दान देना चाहिए। सेवा को सदा आगे बढ़ाते चलो। ऐसे नहीं आज चांस मिला तो कर लिया, या जब चांस मिलेगा तब कर लेंगे। नहीं। जिसके पास खजाना होता है वह कहीं से भी गरीबों को ढूँढकर भी ढिँढोरा पिटवाकर भी दान जरूर करता है। क्योंकि उसे मालूम है दान करने का पुण्य मिलता है। वह दान तो विनाशी है और स्वार्थ का भी हो सकता है। आप सब तो अविनाशी खजानों के महादानी हो। तो सेवा को बढ़ाओ। रेस करो, महादानी बनो। निश्चय से करो, ऐसे नहीं सोचो धरनी ऐसी है। अब समय बदल गया, समय के साथ धरनी भी बदल रही है। पहले के धरनी की जो रिजल्ट थी वह भी नहीं। समय वायुमण्डल को बदल रहा है। आत्माओं की इच्छा भी बदल रही है, सब आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। अभी समय है, समय के प्रमाण सदा के महादानी बनो। वाचा नहीं तो मंसा, मंसा नहीं तो कर्मणा। कर्म द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन करना यह है कर्मणा। सम्पर्क द्वारा भी किसी आत्मा को परिवर्तन कर सकते हो। ऐसे सेवाधारी बनो। रोज रिजल्ट निकालो मंसा, वाचा, कर्मणा क्या सेवा की, कितनों की सेवा की। किस अउमंग उत्साह से सेवा की। यह रोज की रिजल्ट स्वयं ही निकालो। स्वयं और सेवा दोनों की रफतार में आगे बढ़ो। अब कोई नवीनता करो। सेन्टर खोला, गीता पाठशाला खोली, मेला किया यह तो पुरानी बातें हो गईं, नया कुछ निकालो। लक्ष्य रखो, अपने में और सेवा में कोई न कोई नवीनता जरूर लानी है। नहीं तो कभी थक जायेंगे, कभी बोर हो जायेंगे। नवीनता होगी तो सदा उमंग उत्साह में रहेंगे। अच्छा।

माताओं से :- माताओं के लिए विशेष बापदादा सहज मार्ग की सौगात लाये हैं। सहज मार्ग की सौगात सभी को मिली है। सहज प्राप्ति जो होती है यही सौगात है। तो खास बापदादा सहज मार्ग की गिफ्ट लाये हैं – यही नशा रहे। सबसे सहज “मेरा बाबा” कहो बस। मेरा बाबा कहने से अनुभव करने से सर्व प्राप्तियाँ हो जायेंगी। माताओं को विशेष खुशी होनी चाहिए कि हमारे लिए खास बाप आये हैं। और जो भी आये उन्होंने पुरुषों को आगे किया। धर्म पितायें धर्म स्थापन करके चले गये। माताओं को किसी ने भी नामी ग्रामी नहीं बनाया। और बाप ने “पहले माता” का सिलसिला स्थापन किया। तो मातायें सिकीलथी हो गईं ना। कितने सिक से बाप ने ढूँढा और अपना बना लिया। आप लोगों ने तो बिना एड्रेस ढूँढा इसलिए ढंढना नहीं हुआ। बाप ने देखो कैसे कोने-कोने से ढूँढकर निकल दिया। अनेक वृक्षों की डालियाँ अब एक वृक्ष की हो गईं। एक ही चन्दन का वृक्ष हो गया। लोग कहते हैं – दो चार मातायें भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकतीं और अभी मातायें सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हैं। वह कहते, रह नहीं सकतीं और बाप कहते मातायें ही रह सकती हैं। ऐसी माताओं का विशेष मर्तबा है। खूब खुशी में नाचो गाओ, वाह! हमारा श्रेष्ठ भाग्य! कभी भी दुःख की लहर न आये। सभी ने दुःखधाम को छोड़ दिया है ना। बस हम संगमयुगी हैं, सदा सुखधाम शान्तिधाम तरफ आगे बढ़ते रहना। माताओं को देखकर बापदादा को नाज होता है, ना-उम्मीदवार उम्मीदवार बन गईं। विश्व कल्याणकारी बन गईं। अभी विश्व आपकी तरफ देख रहा है, कि हमारे कल्याण वाली मातायें कहाँ हैं, तो अब जगत की मातायें बन जगत का कल्याण करो। सिर्फ लौकिक परिवार की जिम्मेवारी निभाने वाली नहीं लेकिन विश्व के सर्व आत्माओं के सेवा की जिम्मेवारी निभाने वाली। चाहे निमित्त कहाँ भी रहते हो लेकिन स्मृति में विश्व सेवा रहे। जैसा लक्ष्य होगा वैसे लक्षण स्वतः आ जाते हैं। लक्ष्य होगा बेहद का तो लक्षण भी बेहद के आयेंगे। नहीं तो हद में ही फँसे रहेंगे। सदा बाप की हूँ, बेहद की हूँ, इसी स्मृति में सर्व आत्माओं के प्रति शुभ संकल्प द्वारा सेवा करते चलो। दोनों साथ-साथ हों। मुख द्वारा किसको भल समझाओ लेकिन जब तक शुभ भावना का बल उस आत्मा को नहीं देंगे तो फल नहीं निकलेगा। मंसा वाचा दोनों इकट्ठी सेवा हों। सिर्फ सन्देश देने तक नहीं। नहीं तो सिर्फ हाँ-हाँ करके चले जाते हैं। मंसा सेवा साथ-साथ हो तो तीर लग जाए। माताओं को सेवा के मैदान पर आना चाहिए। एक-एक माता एक-एक सेवाकेन्द्र सम्भाले। अगर फुर्सत नहीं है तो आपस में दो तीन का ग्रुप बनाओ। ऐसे नहीं घर का बन्धन है, बच्चे हैं। जिनकी मातायें सोशलवर्कर होती हैं उनके भी तो बच्चे होते हैं ना। वह भी सीख जाते हैं। तो अब अपने आपको हैनडस बनाओ और सेवा को बढ़ाओ। कोई न कोई को निकालकर उनको स्थान दे आगे बढ़ते जाओ। अभी शक्तियाँ मैदान पर आओ। जो पालना ली है उसका रिटर्न दो। जितना सेवा बढ़ायेंगे उतना स्वयं को भी उसका फल मिलेगा, वर्तमान भी शक्तिशाली होगा, और भविष्य तो बनता ही है। जितनी सेवा करेंगे उतना निर्विघ्न रहेंगे और खुशी भी रहेगी। अच्छा –

कुमारियों से :- कुमारियाँ अपने श्रेष्ठ भाग्य को अच्छी तरह से जानती हैं ना? कभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को भूलती तो नहीं। सदा

भाग्य को स्मृति में रखते हुए आगे बढ़ती चलो। संगमयुग में विशेष लिफ्ट की गिफ्ट कुमारियों को मिलती है। क्योंकि कुमारी जीवन फिकर से फारिग जीवन है। घर चलाने का, नौकरी टोकरी का कोई फिकर नहीं। कुमारी अर्थात् स्वतन्त्र। स्वतन्त्रता सभी को प्रिय लगती है। अज्ञान में भी सबका लक्ष्य यही रहता कि हम स्वतन्त्र रहें। इसीलिए स्वतन्त्र आत्मा हूँ, यह स्वतन्त्रता का वरदान आप सबको प्राप्त है। स्वतन्त्रता के वरदानी और सबको भी यही वरदान देंगी ना। कोई के भी चक्र में फँसने वाली नहीं। जब चक्र से निकल चुकी, स्वतन्त्र है तो सेवा करेंगी ना। निमित्त मात्र यह पढ़ाई जो रही है वह करते भी सदा सेवा की स्मृति रहे। पढ़ाई पढ़ते समय भी यह लक्ष्य रहे कि कौन सी ऐसी आत्मा है जिसे बाप का बनायें। पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते परखते रहो कि कौन सी आत्मायें योग्य हैं। तो वहाँ भी सेवा हो जायेगी। कुमारियों को भाषण करना अवश्य सीखना चाहिए। सभी पढ़ाई पढ़ते भी तैयार होती जाओ। पढ़ाई पूरी होते ही सेवा में लग जाना। टीचर्स के साथ :- निमित्त सेवाधारी। निमित्त कहने से सहज ही याद आ जाता कि किसने निमित्त बनाया है। कभी भी सेवाधारी शब्द कहो तो उसके आगे निमित्त जरूर कहो। दूसरा निमित्त समझने से स्वतः ही निर्माण बन जायेंगे। और जो जितना निर्माण होगा उतना फलदायक होगा। निर्माण बनना अर्थात् फल स्वरूप बनना।

वर्तमान समय के हिसाब से सेवाधारी की सेवा कौन सी है? सर्व को हल्के बनाने की सेवा। उड़ती कला में ले जाने की सेवा। उड़ती कला में तब ले जायेंगे जब हल्के होंगे। सर्व प्रकार के बोझ स्वयं के भी हल्के और सर्व के भी बोझ हल्के करने वाले। जिन आत्माओं के निमित्त सेवाधारी बने हैं उन्हीं को मंजिल पर तो पहुँचना है ना। अटकाना वा फँसाना नहीं है लेकिन हल्के बन हल्के बनाना है। हल्के बनेंगे तो मंजिल पर स्वतः पहुँच जायेंगे। सेवाधारियों की वर्तमान समय यही सेवा है। उड़ते रहो उड़ाते रहो। सभी को सेवा की लाटरी मिली है, इसी लाटरी को सदा कार्य में लगाते रहो। हर सेकेण्ड में श्वासों श्वास सेवा चलती रहे। इसी में सदा बिजी रहो। अच्छा -

15-5-83

“छोटे-छोटे बच्चों के गुप में प्राण अव्यक्त बापदादा की पधरामणि”

सदा पुण्य करने के निमित्त बनाने वाले बापदादा अपने सिकीलधे बच्चों प्रति बोले:-

आप बागवान बाप अपने रूहानी बगीचे में खुशबूदार फूलों को और कल की विशेष कल्याण अर्थ निमित्त बनी हुई हिम्मत हुल्लास वाली कलियों को भी देख रहे हैं। कल के तकदीर की तस्वीर नन्हें मुन्ने बच्चों को देख रहे हैं। बापदादा इन छोटे-छोटे बच्चों को धरनी के चमकते सितारे कहते हैं। यही लकी सितारे विश्व को नई रोशनी देने के निमित्त बनेंगे। इन छोटे बड़े बच्चों को देख बापदादा को स्थापना के आदि का नज़ारा याद आ रहा है। जबकि ऐसे छोटे-छोटे बच्चे विश्व कल्याण के कार्य के उमंग उत्साह में दृढ़ संकल्प करने वाले निकले कि हम छोटे सबसे बड़ा कार्य करके दिखायेंगे जो राज्य-नेतायें, धर्म नेतायें, विज्ञानी आत्मायें चाहना रखती हैं लेकिन कर नहीं पाती हैं, यह कार्य हम छोटे-छोटे कर दिखायेंगे। और आज उन छोटे-छोटे बच्चों का संकल्प साकार रूप में देख रहे हैं। वो ही थोड़े ही छोटे बच्चे आज शिवशक्ति पाण्डव सेवा के रूप में कार्य कर रहे हैं। हिस्ट्री तो सब जानते हो ना। आज उन्हीं जगें हुए दीपकों से आप सभी दीपमाला बन बाप के गले के हार बन गये हो। अब भी छोटे बड़े बच्चों को देख हर बच्चे में विश्व के कल की तकदीरवान तस्वीर दिखाई देती है। सभी बच्चे अपने को क्या समझते हो? लकी सितारे हो ना। आज का दिन है ही बच्चों को देख हर्षित होते हैं। एक एक बच्चा अनेक आत्माओं को बाप का परिचय दे बाप के वर्से के अधिकारी बनाने वाले हो ना। वैसे भी बच्चों को महात्मा कहा जाता है। सच्चे-सच्चे महान आत्मायें अर्थात् श्रेष्ठ पवित्र आत्मायें आप सब हो ना! ऐसी महान आत्मायें सदा अपने एक ही दृढ़ संकल्प में रहती हो? सदा एक बाप और एक ही श्रीमत पर चलना है। यह पक्का निश्चय किया है ना। अपने-अपने स्थानों पर जाए किसी भी संग में तो नहीं आने वाले हो? आप सभी का फोटो यहाँ निकल गया है। इसलिए सदा अपना श्रेष्ठ जीवन याद रखना। हम हर एक बच्चा विश्व के सर्व आत्माओं के श्रेष्ठ परिवर्तन के निमित्त हैं, सदैव यह याद रखना। इतनी बड़ी जिम्मेवारी उठाने की हिम्मत है? सभी बच्चे अमृतवेले से लेकर अपने सेवा की जिम्मेवारी निभाने वाले हो? जो भी किसी भी बात में कमज़ोर हो तो उसको अभी से ठीक कर लेना। आप सभी के ऊपर सभी की नज़र है। इसलिए अमृतवेले से लेकर रात तक सहज योगी श्रेष्ठ योगी जो भी श्रेष्ठ जीवन के लिए दिनचर्या मिली हुई है, उसी प्रमाण सभी को यथार्थ रीति चलना पड़ेगा - यह अटेन्शन अभी से दृढ़ संकल्प के रूप में रखना। सभी को योगी के लक्षणों का पता है? (सब बच्चे बापदादा को हरेक बात पर जी हाँ का रेसपान्ड करते रहे) योगी आत्माओं की बैठक, चलन, दृष्टि क्या होती है यह सब जानते हो? ऐसे ही चलत हो वा थोड़ी-थोड़ी चंचलता भी करते हो? सब योगी आत्मायें हो ना! जो दुनिया वाले करते हैं वह आप बच्चे नहीं कर सकते। आप महान आत्मायें ऐसे शान्त स्वरूप रहो जो भल कितने भी बड़े-बड़े हों लेकिन आप शान्त स्वरूप आत्माओं को देख शान्ति की अनुभूति करें और यही दिखाई दें कि यह साधारण बच्चे नहीं लेकिन सभी अलौकिक बच्चे हैं। न्यारे हैं और विशेष आत्मायें हैं। तो ऐसे चलते हो? अभी से यह भी परिवर्तन करना। आज सभी बच्चों से मिलने के लिए ही विशेष बापदादा आये हैं। समझा!

बच्चों के साथ बड़े भी आये हैं। बापदादा आये हुए सभी बच्चों को विशेष याद दे रहे हैं। साथ-साथ यह तो सभी जानते हो कि वर्तमान समय प्रमाण बापदादा सभी बच्चों को उड़ती कला की ओर ले जा रहे हैं उड़ती कला का श्रेष्ठ साधन जानते हो ना। एक शब्द के परिवर्तन से सदा उड़ती कला का अनुभव कर सकते हो। एक शब्द कौन सा? सिर्फ “सब कुछ तेरा”। ‘मेरा’ शब्द बदल ‘तेरा’ कर लिया। तेरा शब्द ही तेरा हूँ बना देता है। और यहीं एक शब्द सदा के लिए डबल लाइट बना देता है। तेरा हूँ तो आत्मा लाइट है। और जब सब कुछ तेरा तो भी लाइट (हल्के) बन गये ना। तो सिर्फ एक शब्द ‘तेरा’। डबल लाइट बन जाने से सहज उड़ती कला वाले बन जाते। बहुत समय का अभ्यास है ‘मेरा’ कहने का। जिस मेरे शब्द ने ही अनेक प्रकार के फेरे में लाया है। अभी इसी एक शब्द को परिवर्तन कर लो। मेरा सो तेरा हो गया। यह परिवर्तन मुश्किल तो नहीं है ना। तो सदा इसी एक शब्द के अन्तर स्वरूप में स्थित रहो। समझा क्या करना है। सदा एक ही लगन में मगन रहने वाले, ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें अविनाशी श्रेष्ठ बना रही हैं। इसलिए सदायह एक शब्द याद रखो। समझा! इसी आधार पर जितना आगे बढ़ने चाहो उतना आगे बढ़ सकते हो। और जितना अपने पास खजाने जमा करने चाहो उतने खजाने जमा कर सकते हो। वैसे भी लौकिक जीवन में सदा जो भी नामीग्रामी अच्छे कुल वाली आत्मायें होती हैं वह सदा अपने जीवन के लिए दान पुण्य करने का लक्ष्य रखती हैं। आप सभी सबसे बड़े ते बड़े कुल, श्रेष्ठ कुल के हो। तो श्रेष्ठ कुल वाली ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् सर्व खजानों से सम्पन्न आत्मायें उन्हों का भी लक्ष्य क्या है? सदा महादानी बनो। सदा पुण्य आत्मा बनो। कभी भी संकल्प में भी किसी विकार के वश कोई संकल्प भी किया तो उसको क्या कहा जायेगा? पाप वा पुण्य? पाप कहेंगे ना। स्वयं के प्रति भी सदा पुण्य कर्ता बनो। संकल्प में भी पुण्य आत्मा, बोल में भी पुण्य आत्मा और कर्म में भी पुण्य आत्मा। जब पुण्य आत्मा बन गये तो पाप का नाम निशान नहीं रह सकता। तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम सर्व ब्राह्मण आत्मायें सदा की पुण्य आत्मायें हैं। किसी भी आत्मा के प्रति सदा श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखना यह सबसे बड़ा पुण्य है। चाहे कैसी भी आत्मा हो, विरोधी आत्मा हो वा स्नेही आत्मा हो लेकिन पुण्य आत्मा का पुण्य ही है – जो विरोधी आत्मा को भी श्रेष्ठ भावना के पुण्य की पूँजी से उस आत्मा को भी परिवर्तन करे। पुण्य कहा ही जाता है, जिस आत्मा को जिस वस्तु की अप्राप्ति हो उसको प्राप्त कराने का कार्य करना –यह पुण्य है। जब कोई विरोधी आत्मा आपके सामने आती है तो पुण्य आत्मा, सदा उस आत्मा को सहनशक्ति से वंचित आत्मा है – उसी नज़र से देखेंगे। और अपने पुण्य की पूँजी द्वारा शुभ भावना द्वारा श्रेष्ठ संकल्प द्वारा उस आत्मा को सहनशक्ति की प्राप्ति के सहयोगी आत्मा बनेंगे। उसके लिए यही पुण्य का कार्य हो जाता है। पुण्य आत्मा सदा स्वयं को दाता के बच्चे देने वाला समझते हैं। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति के लेने वाले की कामना से परे रहते हैं। यह आत्मा कुछ देवे तो मैं दूँ, वा यह भी कुछ करे तो मैं भी करूँ, ऐसी हद की कामना नहीं रखते। दाता के बच्चे बन सबके प्रति स्नेह सहयोग, शक्ति देने वाले पुण्य आत्मा होंगे। पुण्य आत्मा कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना नहीं रखते। क्योंकि पुण्य आत्मा जानते हैं कि यह हद की प्रशंसा को स्वीकार करना सदाकाल की प्राप्ति से वंचित होना है। इसलिए वह सदा देने में सागर के समान सम्पन्न रहते हैं। पुण्य आत्मा सदा अपने हर बोल द्वारा औरों को खुशी में बाप के स्नेह में अतीन्द्रिय सुख में रूहानी आनन्दमय जीवन का अनुभव करायेगे। उनका हर बोल खुशी की खुराक होगी, पुण्य आत्मा का हर कर्म सर्व आत्माओं के प्रति सदा सहयोग के प्राप्ति कराने वाला होगा। और हर आत्मा अनुभव करेगी कि इस पुण्य आत्मा काकर्म-देख सदा आगे उड़ने का सहयोग प्राप्त हो रहा है। समझा पुण्य आत्मा के लक्षण। तो ऐसे सदा पुण्यात्मा बनो। अर्थात् श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन का प्रत्यक्ष स्वरूप बनो। पवित्र प्रवृत्ति वाली पुण्य आत्मायें बनो तब ही ऐसी पुण्य आत्माओं के प्रभाव से पाप का नाम निशान समाप्त हो जायेगा। अच्छा – ऐसे सदा हर संकल्प द्वारा उड़ती कला में जाने वाले, सदा दाता के बच्चे बन सबको देने वाली विशेष आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमसते।

17-5-83

संगम युग – मौजों के नज़ारों का युग

राजाओं का भी राजा बनाने वाले, बेफिकर बादशाह भाग्यवान बच्चों के प्रति बापदादा बोले:-

आज बापदादा अपने छोटे बड़े बेफिकर बादशाहों को देख रहे हैं। संगमयुग पर ही इतनी बड़े ते बड़े बादशाहों की सभा लगती है। किसी भी युग में इतने बादशाहों की सभा नहीं होती है। इस समय ही बेफिकर बादशाहों की सभा कहो वा स्वराज्य सभा कहो सभी देख रहे हो। छोटे बड़े यही जानते हैं और मानकर चलते हैं। कि मैं बादशाह हूँ। तो बादशाहों की सभा वा स्वराज्य सभा कितनी बड़ी हुई! और बादशाहों का बादशाह वा राजाओं का भी राजा बनाने वाले – वर्तमान के राजे सो भविष्य के राजे। ऐसे राजाओं को देख वा सर्व बेफिकर बादशाहों को देख लाखों बच्चे बादशाह हों। किसी से भी पूछो तो क्या कहते? नन्हा सा बच्चा भी कहता “मैं लक्ष्मी-नारायण बनूँगा” सभी बच्चे ऐसे समझते हो ना। ऐसे बाप को ऐसे राजे बच्चों के ऊपर कितना नाज़ होगा! आप सभी को भी यह ईश्वरीय फखुर है कि हम भी राजा फैमली के हैं। राज्यवंशी हैं? तो आज बापदादा एक-एक बच्चे को देख रहे हैं। बाप के

कितने भाग्यवान बच्चे हैं! हर एक बच्चा भाग्यवान है। साथ-साथ समय का भी सहयोग है। क्योंकि यह संगमयुग जितना छोटा युग है उतना ही विशेषताओं से भरा हुआ युग है। जो संगमयुग पर प्राप्तियाँ हैं वह और कोई युग में नहीं हो सकतीं। संगमयुग है ही मौजों के नज़ारों का युग। मौजें ही मौजें हैं ना! खाओ तो भी बाप के साथ मौजों में खाओ। चलो तो भी भाग्यविधाता बाप के साथ हाथ देते चलो। ज्ञान-अमृत पिओ तो भी ज्ञान दाता बाप के साथ-साथ पिओ। कर्म करो तो भी करावनहार बाप के साथ निमित्त करने वाले समझ करो। सोओ तो भी याद की गोदी में सोओ। उठो तो भी भगवान से रूहरूहाण करो। सारी दिनचर्या बाप और आप। और बाप है तो पाप नहीं है। तो क्या होगा। मौजें ही मौजें होंगी ना। बापदादा देख रहे थे तो सभी बच्चे मौजों में रहते हैं। यह छोटा सा जन्म लिया हो मौजें मनाने के लिए है। खाओ, पिओ याद की मौज में रहो। इस अलौकिक जन्म का धर्म अर्थात् धारणा मौज में रहना है। दिव्य कर्म सेवा की मौज में रहना है। जनम का लक्ष्य ही है मौजों में रहना। और सारे विश्व को सर्व मौजों वाली दुनिया बनाना। तो सवेरे से लेकर रात तक मौजों के नज़ारे में रहते हो ना। बेफिकर बादशाह हो करके दिन रात बिताते हो ना। तो सुना आज वतन में क्या देखा! बेफिकर बादशाहों की सभा। हरेक बादशाह अपने याद की मौज में बाप के दिलतख्तनशीन स्मृति के तिलकधारी थे। अच्छा – आज तो मिलने का दिन है इसलिए अपने बादशाहों से मिलने आये हैं। अच्छा –

सदा बेफिकर बादशाह, मौजों की जीवन में मौजों के नज़ारे देखने वाले, सदा भाग्यवान बाप के साथ-साथ रहने वाले, ऐसे स्वराज्य अधिकारी, दिलतख्तनशीन, पद्मापद्म भाग्यवान बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

छोटें बच्चों से :- सभी बच्चे अपने को महान आत्मायें समझते हुए पढ़ते हो, खेलते हो, चलते हो? हम महात्मायें हैं, सदा यह खुशी रखो, नशा रखो कि हम ऊंचे ते ऊंचे भगवान के बच्चे हैं। भगवान को देखा है? कहाँ हैं? कोई कहे हमको भी भगवान से मिलाओ तो मिला सकते हो? सभी भगवान के बच्चे हो तो भगवान के बच्चे कभी लड़ते तो नहीं हो? चंचलता करते हो? भगवान के बच्चे तो योगी होते हैं फिर आप चंचलता क्यों करते हो? सदा अपने को महान आत्मा, योगी आत्मा समझो। क्या बनेंगे? लक्ष्मी नारायण दोनो ही एक साथ बनेंगे? या कभी लक्ष्मी बनेंगे, कभी नारायण बनेंगे! लक्ष्मी बनना पंसद है? अच्छा – सदा नारायण बनना चाहते हो तो सदा शान्त योगी जीवन में रहना और रोज सुबह उठकर गुडमार्निंग जरूर करना। ऐसे नहीं देरी से उठो और जल्दी-जल्दी तैयार होकर चले जाओ। ३ मिनट भी याद में बैठ गुडमार्निंग जरूर करो, बातें करो पीछे तैयार हो। यह व्रत कभी भी भूलना नहीं। अगर गुडमार्निंग नहीं करेंगे तो खाना नहीं खायेंगे। खाना याद रहेगा तो पहले गुडमार्निंग करना याद रहेगा। गुडमार्निंग करके फिर खाना खाना। याद करो ज्ञान की पढ़ाई को, अच्छे गुण धारण करो तो विश्व में आप रूहानी गुलाब बन खुशबू फैलायेंगे। गुलाब के फल सदा खिले रहते हैं और सदा खुशबू देते हैं। तो ऐसे ही खुशबूदार फूल हो ना! सदा खुश रहते हो या कभी थोड़ा दुःख भी होता है? जब कोई चीज नहीं मिलती होगी तब दुःख होता होगा या मम्मी डेडी कुछ कहते होंगे तो दुःख होता होगा। ऐसा कुछ करो ही नहीं जो मम्मी डेडी कहें। ऐसा चलो जैसा फरिश्ते चल रहे हैं। फरिश्तों का आवाज़ नहीं होता। मनुष्य जो होते हैं वह आवाज़ करते हैं। आप ब्राह्मण सो फरिश्ते आवाज़ नहीं करो। ऐसा चलो जो किसी को पता ही न चलें। खाओ पियो, चलो फरिश्ता बन करके। बापदादा सभी बच्चों को बहुत बहुत बधाई दे रहे हैं। बहुत अच्छे बच्चे हैं और सदा अच्छे ही बनकर रहना। अच्छा –

बच्चियों से :- कुमारी जीवन की क्या महिमा है? कुमारियों को पूजा जाता है, क्यों? पवित्र आत्मायें हैं। तो सभी पवित्र आत्मायें पवित्र याद से औरों को भी पवित्र बनाने की सेवा में रहने वाली हो ना! चाहे छोटी हो चाहे बड़ी हो लेकिन बाप का परिचय तो सभी को दे सकते हो ना। छोटे भी बहुत अच्छा भाषण करते हैं। बापदादा सबसे छोटे से छोटी कुमारी को बड़ी स्टेज पर भाषण करने के लिए कहें तो तैयार हो? संकोच तो नहीं करेंगी। डर तो नहीं जायेगी! सदा अपने को विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करने वाली विश्व कल्याणकारी आत्मा समझो। रिवाजी साधारण कुमारियाँ नहीं लेकिन श्रेष्ठ कुमारी। श्रेष्ठ कुमारी श्रेष्ठ काम करेगी ना। सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कार्य है बाप का परिचय दे बाप का बनाना। दुनिया वाले भटक रहे हैं, ढूँढ रहे हैं और तुम लोगों ने जान लिया, पा लिया, कितनी तकदीरवान, भाग्यवान हो। भगवान के बन गये इससे बड़ा भाग्य और कुछ होता है। तो सदा भाग्यवान आत्मा हूँ – इसी खुशी में रहो। यह खुशी में रहो। यह खुशी अगर गुम हुई तो फिर कभी रोयेंगे, कभी चंचलता करेंगे। सदा आपस में भी प्यार से रहो और लौकिक माता-पिता के भी कहने पर आज्ञाकारी रहो। पारलौकिक बाप की सदा याद में रहो। तब ही श्रेष्ठ कुमारियाँ बन सकेंगी। तो सदा अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो। मन्दिरों में जो शक्तियों की पूजा होती है, वही हो ना! एक-एक कुमारी बहुत बड़ा कार्य कर सकती। विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बन सकती हो। बापदादा ने विश्व परिवर्तन का कार्य बच्चों को दिया है। तो सदा बाप और सेवा की याद में रहो। विश्व परिवर्तन करने की सेवा के पहले अपना परिवर्तन करो। जो पहले की जीवन थी उससे बिल्कुल बदलकर बस श्रेष्ठ आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ, महान आत्मा हूँ, भाग्यवान आत्मा हूँ, इसी याद में रहो। यह याद स्कूल या कालेज में जाकर भूलती तो नहीं हो ना! संग का रंग तो नहीं लगता! कभी खाने पीने की तरफ कहाँ आकर्षण तो नहीं जाती। थोड़ा बिस्कुट या आइस्क्रीम खा लें, ऐसी इच्छा तो नहीं होती! सदैव याद में रहकर बनाया हुआ भोजन ब्रह्मभोजन खाने वाली – ऐसे पक्के! देखना वहाँ जाकर संग में नहीं आ जाना। कुमारियाँ जितना भाग्य बनाने चाहो बना सकती हो। छोटे-पन से

लेकर सेवा के शौक में रहो। पढ़ाई भी पढ़ो और पढ़ाना भी सीखो। छोटेपन में होशियार हो जायेंगे तो बड़े होकर चारों ओर की सेवा में निमित्त बन जायेंगे। स्थापना के समय भी छोटे-छोटे थे वह अब कितनी सेवा कर रहे हैं, आप लोग उनसे भी होशियार बनना। कल की तकदीर हो। कल भारत स्वर्ग बन जायेंगे ता कल की तकदीर आप हो। कोई भी आपको देखे तो अनुभव करे कि यह साधारण नहीं, विशेष कुमारियाँ हैं।

वह पढ़ाई पढ़ते भी मन की लगन ज्ञान की पढ़ाई में रहती चाहिए। पढ़ने के बाद भी क्या लक्ष्य है? श्रेष्ठ आत्मा बन श्रेष्ठ कार्य करने का है। नौकरी की टोकरी उठाने का तो नहीं है ना! अगर कोई कारण होता है तो वह दूसरी बात है। माँ बा के पास कमाई का दूसरा कार्ड साधन नहीं है, तो वह हुई मजबूरी। लेकिन अपना वर्तमान और भविष्य सदा याद रखो। काम में क्या आयेगा? यह ज्ञान की पढ़ाई ही २१ जन्म काम आयेगी। इसलिए निमित्त मात्र अगर लौकिक कार्य करना भी पड़ता तो भी मन की लगन बाप और सेवा में रहे। तो सभी राइट हैंड्स बनना, लेफ्ट हैंड नहीं। अगर इतने सब राइट हैंड हो जाएं तो विनाश हुआ कि हुआ। इतनी शक्तियाँ विजय का झण्डा लेकर आ जाएं तो रावण राज्य का समय समाप्त हो जाए। जब ब्रह्माकुमारी बनना है तो फिर डिग्री क्या करेंगी? यह तो निमित्त मात्र जनरल नालेज से बुद्धि विशाल बने उसके लिए यह पढ़ाई पढ़ी जाती। मन की लगन से नहीं, ऐसे नहीं बाकी एक साल में यह डिग्री लें, फिर दूसरे साल में यह डिग्री लें... ऐसे करते-करते काल आ जाए तो... इसलिए जो निमित्त हैं उनसे राय लेते रहो। आगे पढ़ें या न पढ़ें। कई हैं जो पढ़ाई की शौक में अपना वर्तमान और भविष्य छोड़ देती हैं। धोखा खा लेती हैं। अपने जीवन का फैसला स्वयं खुद को करना है। माँ बाप कहें, नहीं। स्वयं जज बनो। आप शिव शक्तियाँ हो, आपको कोई बन्धन में बाँध नहीं सकता। बकरियों को बन्धन में बाँध सकते हैं, शक्तियों को नहीं। शक्तियों की सवारी शेर र है, शेर खुले में रहता है, बन्धन में नहीं, तो सदा हम बाप की राइट हैंड हैं – यह याद रखना। अच्छा।

टीचर्स के साथ :- सदा यही स्मृति में रहता है ना कि हम निमित्त सेवाधारी हैं। करावनहार निमित्त बनाए करा रहा है। तो करावनहार जिम्मेवार हुआ ना। निमित्त बनने वाले सदा हल्के। डायरेक्शन मिला, कार्य किया और सदा हल्के रहे। ऐसे कहते हो या कभी सेवा का बोझ अनुभव होता है? क्योंकि अगर बोझ होगा तो सफलता नहीं होगी। बोझ समझने से कोई भी कर्म यथार्थ नहीं होगा। स्थूल में भी जब कोई कार्य का बोझ पड़ जाता है तो कुछ तोड़ेंगे, कुछ फोड़ेंगे, कुछ मन मुटाव होगा, डिस्टर्ब होंगे। कार्य भी सफल नहीं होगा। ऐसे यह अलौकिक कार्य भी बोझ समझकर किया तो यथार्थ नहीं होगा। सफल नहीं हो सकेंगे। फिर बोझ बढ़ता जाता है। तो संगम-युग का जो श्रेष्ठ भाग्य है हल्के हो उड़ने का वह ले नहीं सकेंगे। फिर संगमयुगी ब्राह्मण बन किया क्या! इसलिए सदा हल्के बन निमित्त समझते हुए हर कार्य करना – इसी को ही सफलतामूर्त कहा जाता है। जैसे आजकल के जमाने में पैर के नीचे पहिये लगाकर दौड़ते हैं, वह कितने हल्के होते हैं। उनकी रफ्तार तेज हो जाती है। तो जब बाप चला रहा है, तो श्रीमत के पहिये लग गये ना। श्रीमत के पहिये लगने से स्वतः ही पुरुषार्थ की रफ्तार तेज हो जायेगी। सदा ऐसे सेवाधारी बनकर चलो। जरा भी बोझ महसूस नहीं करो। करावनहार जब बाप है तो बोझ क्यों? इसी स्मृति से सदा उड़ती कला में जाते रहो। बस सदा उड़ते चलो। इसको कहा जाता है नम्बरवन योग्य सेवाधारी। बस बाबा, बाबा और बाबा। हर सेकेण्ड यह अनहद साज बजता रहे। बस बाबा और मैं, सदा ऐसे समाये रहो तो तीसरा बीच में आ नहीं सकता। जहाँ सदा समाये होंगे, दोनो राजी होंगे तो बीच में कोई नहीं आयेगा। इसको ही कहा जाता है श्रेष्ठ सेवाधारी। ऐसे हो? दूसरा कुछ नहीं देखो, कुछ नहीं सुनो। सुनने से भी प्रभाव पड़ता। बस बाबा और मैं सदा मौज मनाओ। मेहनत तो बहुत की, अभी मौज मनाने का समय है। एक गीत भी है ना मौजे ही मौजे... उठो, चलो, सेवा करो, सोओ सब मौज में। खूब नाचो, गाओ, खुशी में रहो। सेवा भी खुशी-खुशी से नाचते-नाचते करो। ऐसे नहीं लुढ़कते लमते गिरते चढ़ते करो। संगम पर सर्व सम्बन्ध की मौजें हैं। तो खूब मौज मनाओ। सदा मौजों के ही नजारे में रहो। अच्छा!

19-5-83

साक्षी दृष्टा कैसे बनें?

सर्व शक्तिवान, सदा विश्व कल्याणकारी शिवबाबा बोले :-

आज बापदादा इस पुरानी दुनिया और पुराने राज्य की दुनिया, जड़जड़ीभूत हुई दुनिया का समाचार सुन रहे थे। बापदादा देख रहे थे कि मेरे बच्चों को पुरानी दुनिया में कितना सहज करना पड़ता है। आत्मा के लिए मौजों का समय है लेकिन शरीर से सहन भी करना पड़ता है। अपने राज्य में प्रकृति के पांचों ही तत्व भी सदा आज्ञाकारी सेवाधारी होंगे। लेकिन अपना राज्य स्थापन करने के लिए पुराने को ही नया बनाना है। पुरानी में सेवाधारी बनना ही पड़ता है। अभी की यह सेवा जन्म-जन्मान्तर की सेवा से मुक्त कर देती है। इस सेवा के फलस्वरूप प्रकृति और चैतन्य सेवाधारी आपके चारों ओर घूमते रहेंगे। इसलिए सदाकाल की सर्व प्राप्ति के आगे यह थोड़ा बहुत सहन करना भी नहीं लगता। श्रेष्ठ सेवा के नशे और खुशी में सहन करना एक चरित्र रूप में बदल जाता है। भागवत आप सबके सहन शक्ति के चरित्रों का यादगार है। तो सहन करना नहीं लेकिन यादगार चरित्र बन रहे हैं। अभी तक भी

यही गायन सुन रहे हो कि भगवान के बच्चों ने बाप के मिलन के स्नेह में क्या-क्या किया। गोपी वल्लभ के गोप गोपिकाओं ने क्या-क्या किया। तो यह सहन करना नहीं लेकिन सहन ही शक्तिशाली बना रहे हैं। सहन शक्ति से मास्टर सर्वशक्तिवान बनते हो। सहन करना लगता है कि खेल लगता है? मन तो सदा नाचता रहता है ना। तो मन की खुशी यह थोड़ा बहुत सहन भी खुशी में परिवर्तन कर देती है। तन भी तेरा, मन भी तेरा। तो जिसको तेरा कहा वह जाने। आप तो न्यारे और प्यारे रहो। सिर्फ जिस समय तन का हिसाब किताब चुक्त्तू करने का पार्ट बजाते हो उस समय यह निरन्तर स्मृति रहे कि बाबा आ जानो आपका काम जाने। मैं बीमार हूँ, नहीं मेरा शरीर बीमार है, नहीं, तेरी अमानत है तुम जानो। मैं साक्षीदृष्टा बन आपके अमानत की सेवा कर रही हूँ। इसको कहा जाता है साक्षीदृष्टा। ट्रस्टी बनना। ऐसे ही मन भी तेरा। मेरा है ही नहीं। मेरा मन नहीं लगता, मेरा योग नहीं लगता, मेरी बुद्धि एकाग्र नहीं होती। यह मेरा शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ। मेरापन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है। मेरा धन, मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरा बच्चा ज्ञान में नहीं चलता, उसकी बुद्धि का ताला खोल दो। सिर्फ उन्हीं का क्यों सोचते हो! मेरे के भाव से क्यों सोचते! यह कभी भी कोई बच्चे ने अभी तक नहीं कहा है कि मेरे गांव की वा देश की आत्मा का ताला खोलो। कहते मेरी पत्नी का, मेरे बच्चों का, मेरेपन का भाव, भाव बेहद में नहीं ले आता। इसलिए बेहद की शुभ भावना हर आत्मा के प्रति रखते हुए सर्व के साथ उन आत्माओं को भी देखो। क्या समझा! तेरा तो तेरा हो गया। मेरा कोई बोझ नहीं। चाहे बापदादा कहाँ भी सेवा प्रति निमित्त बनावे। तन द्वारा सेवा करावे, मन द्वारा मन्सा सेवा करावे, जहाँ रखे, जिस हाल में रखे, चाहे दाल-रोटी खिलावे, चाहे ३६ प्रकार खिलावे। लेकिन जब मेरा कुछ नहीं तो तेरा तू जानो। आप क्यों सोचते हो? भगवान अपने बच्चों को सदा तन से, मन से, धन से सहज रखेगा। यह बाप की गैरन्टी है। फिर आप लोग क्यों बोझ उठाते हो। उस दिन भी सुनाया ना कि सब कुछ तेरा करने वाले हो तो जो बाप खिलावे तो खाओ, पिओ और मौज करो, याद करो। सिर्फ एक डियुटी आपकी है बस। बाकी सब डियुटी बाबा आपेही निभायेंगे। एक ही डियुटी तो कर सकते हो ना! मेरा कहते हो तब मन चंचल होता है। यही सोचते हो ना कि यह मुश्किल बात है। मुश्किल है नहीं लेकिन कर देते हो। मेरेपन का भाव मुश्किल बना देता। और तेरेपन का भाव सहज बना देता है। विश्व कल्याण की भावना रखो तो विश्व कल्याण का कर्तव्य जल्दी समाप्त हो जायेगा। और अपने राज्य में चले जायेंगे। वहाँ ऐसे पंखे नहीं हिलायेंगे। (गर्मी होने के कारण सबको हाथ में रंग बिरंगे पंखे दिये गये थे) वहाँ तो प्रकृति आपका पंखा करेगी। एक एक हीरा इतनी रोशनी देंगे जो आज की लाइट से भी वन्डरफुल लाइट होगी। सदा आपके महलों में नौरंग के हीरों की लाइट होगी। सोचो कितनी बढ़िया लाइट होगी। नौरंग की मिक्स लाइट कितनी बढ़िया होगी। और यहाँ तो देखो एक रंग की लाइट भी खेल करती रहती है। इसलिए सेवा का कर्तव्य सम्पन्न करो। सम्पन्न बनो तो अपना राज्य, सर्व सुखों से सम्पन्न राज्य आया कि आया। समझा!

आज सभी के जाने का दिन है, बापदादा भी जल्दी-जल्दी करेंगे तब तो जायेंगे। अब तो ट्रेनों के रश में जाना पड़ता है फिर तो आपके महलों में आगे पीछे अनेक विमान खड़े होंगे। चलाने वाले का भी इन्तजार नहीं करना पड़ेगा, छोटे से छोटे जीवन में भी चला सकते हो। छोटा बच्चा भी स्वीच दबायेगा और उड़ेगा। एक्सीडेंट तो होना ही नहीं है। विमान भी तैयार हो रहे हैं। लेकिन आप सब एवररेडी हो जाओ। स्वर्ग तो तैयार है ही है। विश्व कर्मा आर्डर करेगा और महल और विमान तैयार। ईश्वरीय जादू के प्रालब्ध की नगरी है। (सभी पंखे हिला रहे थे) यह भी अच्छी सीन है, फोटो निकालने वाली। ऐसी कोई सभा नहीं देखी होगी जो रंग बिरंगे पंखे हिलाने वाले हों। अच्छा!

सदा तेरा तू जानो, ऐसे दृढ़ संकल्पधारी, सदा बेहद के सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावनाधारी, सदा हर कर्म याद द्वारा यादगार बनाने वाले, ऐसे एवररेडी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

ट्रेनिंग करने वाली कुमारियों से :- सभी अपने को बाप की राइट हैण्ड समझती हो ना! लेफ्ट हैण्ड तो नहीं हो। राइट हैण्ड एक हाथ को भी कहते हैं और दूसरा जो सेवा में सदा सहयोगी होते हैं उसको भी राइट हैण्ड कहा जाता है। तो सदा सेवा में सहयोगी बनने का दृढ़ संकल्प कर लिया है ना। वहाँ जाकर भूल तो नहीं जायेंगी। जो भी कारणे-अकारणे सेवा में अभी नहीं निकल सकती वह भी यही लक्ष्य रखना कि हमें सेवा में साथी बनना ही है। सदा हर संकल्प में सेवा समाई हो। जहाँ भी रहो, वहाँ सदा अपने को पूज्य महान आत्मा समझकर चलना। न आपकी दृष्टि किसी में जाए, न और किसी की दृष्टि आप पर जाये। ऐसी पूज्य आत्मा समझकर चलना। पूज्य आत्मा की स्मृति में रहने वाली कुमारियों के तरफ किसी की भी ऐसी दृष्टि नहीं जा सकती है। सदा इस बात में अपने को सावधान रखना। कभी भी अपने को हल्की स्मृति में नहीं रखना। ब्रह्माकुमारी तो बन गई, ... कभी ऐसे अलबेले नहीं बनना। अभी तो दादी बन गई, दीदी बन गई... नहीं। यह तो कहने में भी आता है। लेकिन हैं श्रेष्ठ आत्मा, पूज्य आत्मा, शक्ति रूप आत्मा... शक्ति के ऊपर किसी की भी नजर नहीं जा सकती। अगर किसी की गई तो दिखाते हैं – वह भैंस बन गया। और भैंस काली होती है तो वह भैंस अर्थात् काली आत्मा बन गई। और भैंस बुद्धि अर्थात् मोटी बुद्धि हो जायेगी। अगर किसी की भी बुरी दृष्टि जाती है तो वह मोटी बुद्धि, भैंस बुद्धि बन जायेगा। क्यों किसी की दृष्टि जाए। इसमें भी कमजोरी कुमारियों की कहेंगे। पाण्डवों की अपनी कमजोरी, कुमारियों की अपनी। इसलिए अपने को चेक करो। दादी दीदियों को भी डर इसी बात का रहता है कि कोई की

नज़र न लग जाए। तो ऐसी पक्की हो ना! कभी भी किसी से प्रभावित नहीं होना। यह सेवाधारी बहुत अच्छा है, यह सेवा में अच्छे साथी मददगार है, नहीं। यह तो इतना करता है, नहीं। बाप कराता है। मैं इतनी सेवा करती हूँ, नहीं। बाप मेरे द्वारा कराता है तो न स्वयं कमज़ोर बनो और न दूसरों को कमज़ोर बनने की मार्जिन दो। इस बात में किसी की भी रिपोर्ट नहीं आनी चाहिए। पाण्डव भी बहुत चतुर होते हैं, कोई अच्छी-अच्छी चीज़ें ले आयेंगे, खाने की, पहनने की – यह भी माया है। उस समय वह माया के परवश होते हैं। लेकिन आप तो माया को परखने वाली हो ना। उस चीज को चीज नहीं समझना, वह सांप है। सांप जरूर काटेगा। जब इतनी कड़ी दृष्टि रखेंगी तब ही सेफ रह सकेंगी। नहीं तो किसी में भी माया प्रवेश होकर अपना बनाने की कोशिश बहुत करेगी। जैसे शुरू में छोटी-छोटी कुमारियों को बापदादा कहते थे इतनी मिर्ची खानी पड़ेगी, इतना पानी पीना पड़ेगा, डरना नहीं। तो माया आयेगी, बहुत बड़ें रूप से आयेगी... लेकिन परखने वाले सदा विजयी होते हैं। हार नहीं खाते। तो सभी ने परखने की शक्ति धारण की है या करनी है? देखो। अभी सबका फोटो निकल गया है। पक्की रहना। कुमारियाँ अगर इस बात में शक्ति रूप बन गई तो वह-वाह की तालियाँ बजेंगी। बापदादा भी विजय के पुष्प बरसायेंगे। अभी देखेंगे रिज़ल्ट। ऐसे अंगद के मुआफिक बनना।

समय पर समझ आ जाना यह भी तकदीरवान की निशानी है। समय पर फल देने वाला वृक्ष मूल्यवान कहा जाता है। संसार में रखा ही क्या है। चिंता और दुख के सिवाय और कुछ भी नहीं है। तो पक्का सौदा करना। कोई बढ़िया आकर्षण वाली चीज़ें आये, कोई आकर्षण वाले व्यक्ति सामने आये, तो आकर्षित नहीं हो जाना। संकल्प स्वप्न में भी बीती हुई बातें याद न आये। जैसे वह पिछले जन्म की बात हो गई। कभी सोचना भी नहीं।

पार्टियों से मुलाकात करते अमृतवेला हो गया:- देखो, दिन को रात, रात को दिन बना दिया। यही गोप गोपिकाओं का गायन है। महारास करते-करते रात से दिन हो गया – यह आप सबका गायन है ना। सदा बाप के स्नेह में समाये हुए, स्नेही आत्मायें हो ना। जितना बच्चे स्नेही हैं, उससे पदमगुणा बाप स्नेही है। ऐसे अनुभव होता है ना। बस सेकेण्ड में सोचो और बाबा हाजिर हो जाते। अच्छा सेवाधारी है ना। सबसे क्विक सेवाधारी बाप हुआ ना। दूसरा आने में देरी लगायेगा, उठेगा, तैयार होगा, चलेगा तब पहुँचेगा। बाप तो सदा एवररेडी है। जब बुलावो, सेकेण्ड से भी कम टाइम पर पहुँच जायेगा। सभी की सेवा के लिए सदा जाहिर है। कभी तंग नहीं करते। देखो अभी भी जितना समय बैठे उतना समय स्नेह में समाये हुए बैठ या थक गये। बापदादा बच्चों को देख-देख खुश होते हैं। बाप ने ठेका उठाया है कि सभी बच्चों को राज़ी करना है तो अपना ठेका पूरा करेंगे ना। सदा हरेक बच्चा एक दो से प्रिय है। कोई अप्रिय हो नहीं सकता। बच्चे हैं, बच्चे अप्रिय कैसे हो सकते। सब एक दो से आगे हैं। सभी बच्चे राजा बच्चे हैं, प्रजा बच्चे नहीं।

आपके जड़ चित्रों के लिए भक्त जागरण करते हैं, कभी तो आप लोगों ने भी किया है तभी भक्त कापी करते हैं। यह जागरण डबल कमाई वाला जागरण है। वर्तमान की कमाई हुई और वर्तमान के आधार पर भविष्य भी श्रेष्ठ हुआ। तो हम कल्याणकारी आत्मायें हैं, हर बात में कल्याण समाया हुआ है, अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप के बच्चे बन गये। चाहे बाहर से अकल्याण का काम दिखाई दे। जैसे मानो एक्सीडेंट हो गया तो नुकसान हुआ ना। लोग तो कहेंगे अकल्याण हो गया। लेकिन उस अकल्याण में भी संगमयुगी आत्माओं के लिए कल्याण भरा हुआ है। नुकसान भी सूली से कांटा हो जाता है। बड़े नुकसान से कम नुकसान हो जाता है। इसमें भी सदा कल्याण समझते हुए आगे बढ़ते चलो। ऐसी कल्याणकारी आत्मा स्वयं को समझते हुए चलो। बाप ने अपने समान बना दिया। बाप कल्याणकारी तो बच्चे भी कल्याणकारी। बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। डबल पूजा आपकी है, डबल राज्य आप करते हो। इतना नशा और इतनी खुशी सदा रहे – वाह रे मैं श्रेष्ठ आत्मा, वाह रे मैं पुण्य आत्मा, वाह रे मैं शिव शक्ति – इसी स्मृति में सदा रहो। अच्छा –

आप सबका घर मधुबन है। मधुबन घर से ही पास मिलेंगी परमधाम घर में जाने की। साकार रीति से मधुबन घर है और निराकारी दुनिया परमधाम है। मधुबन असली घर है, जहाँ आप लोग जा रहे हो, वह सेवा केन्द्र है। घर समझेंगे तो फंस जायेंगे। सेवाकेन्द्र समझेंगे तो न्यारे रहेंगे। जिन आत्माओं के प्रति निमित्त बनते हो उनकी सेवा के सम्बन्ध से निमित्त हो, बल्ड कनेक्शन के सम्बन्ध से नहीं। सेवा का कनेक्शन है। सदा याद और सेवा में रहो तो नष्टमोहा सहज ही बन जायेंगे। अच्छा।

विशेष सेवाधारी अर्थात् हर कार्य में विशेषता दिखाने वाले। सेवाधारी तो सभी हैं लेकिन विशेष सेवाधारी विशेषता दिखायेंगे। जब भी कोई सेवा करो, प्लैन बनाओ तो यही सोचो – सेवा में क्या विशेषता लाई? विशेष सेवा करने से विशेष आत्मायें प्रसिद्ध हो जाती हैं। सदा लक्ष्य रखो ऐसा कोई विशेष कार्य करें जिससे स्वतः ही विशेष आत्मा बन जाएं। बाप और परिवार के आगे आ जाएं। हमेशा कोई न कोई विशेषता दिखाने वाले। विशेषता ही न्यारा और प्यारा बनाती है ना। तो हर कार्य में विशेषता की नवीनता दिखाओ। सच्चे सेवाधारी, सर्व को अपनी शक्तियों के सहयोग से आगे बढ़ाते चलो। इसी सेवा में ही सदा तत्पर रहो। अच्छा –

ओमशान्ति।
